❀ श्री गणेशायनमः ❀

तात्कालिक भृगु प्रश्न

—: अर्थात :—

प्रश्न कल्प वृक्ष

—: जिसको :—

पं हरदेव सहाय मेरठ निवासी ने प्राचीन
पुस्तक से देशी भाषा में अनुवाद करके
पुस्तक बतलाने वालों के लाभार्थ [illegible]

—: प्रकाशक :—

पंडित लक्ष्मीभूषण शिवभरोसे

ज्ञान सागर प्रेस, महाजन पाड़ा

मेरठ – शहर ।

मूल्य प्रति पुस्तक तीन रुपये

ज़रूरी सूचना

१—इस पुस्तक से प्रश्न बतलाने वालों को ईश्वर चाहे तो शीघ्र लाभ होने लगता है इधर प्रश्न बतलाने आरम्भ करो उधर दक्षिणा बटुवे में डालना शुरु करलो भैया अब ईश्वर चाहे तो प्रश्न बतलाने वालों के गहरे हो जायेगे और पुस्तक तो खरीदे ही होंगे परन्तु ऐसी पुस्तक एक ना मिली होगी।

२—यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि इस पुस्तक से जो स्त्री या पुरुष प्रश्न बूझे तो शुद्ध चित्त से प्रथम पुस्तक की पूजा श्रद्धा प्रमाण फल फूल या मिष्टान दक्षिणा से करे खाली हाथ प्रश्न बूझना और बताना दानों को अशुभ है।

३—नीति शास्त्र में कहा है पण्डित के पास गणिका के पास वैद्य के पास बहन बेटी अर्थात् मान ध्यान के पास किसी कार्य को जाय तो खाली जाने से अशुभ है कार्य की सिद्धी नहीं होती है।

४—इस पुस्तक से जरूरी कार्य जो जो प्रश्न हैं सो बूझो परन्तु परीक्षा या पुस्तक का इम्तहान लेने के वास्ते जो प्रश्न बूझे और बतलावेगा उन दोनों के वास्ते अशुभ फल जानों।

निवेदन

प्रश्न बताने की रीति

इस पुस्तक में प्रश्न बताने की बहुत सुगम यह रीति है प्रश्न बूझने वाला शुद्ध चित्त से हाथ पैर धोकर जब प्रश्न बूझे तो फूल, पान, दक्षिणा लेकर आवे तब उसको पूर्व को मुख करके बैठलावे और उससे कहै कि भृगु जी महाराज का ध्यान धर कर जो जो प्रश्न तुम्हें बूझने हों अपने चित्त में सोचलो जब वह सोचले तब उससे विष्णु भगवानका आराधन करा कर कहै यह जो प्रश्न चक्र है इसके किसी कोठे में अंक की संख्या पर उंगली धरो जब वह उंगली धरे तो उंगली धरने वाली संख्या में प्रच्छक के नाम के अक्षर और भृगु जी के नाम के अक्षर गिन कर जोड़ लो फिर अक्षर जोड़ने से जो संख्या हो बस उसी अंक संख्या का पत्रा अर्थात् पुस्तक का वही (पृष्ट) खोल कर प्रश्न पढ़ कर प्रच्छक को सुना दो ईश्वर चाहे तो वही प्रश्न निकलेगा जो प्रच्छक ने विचारा है यदि प्रश्न कम मिले तो फिर अक्षर ठीक ठीक समझकर जोड़ो प्रच्छक फल सुना दो।

आपका शुभचिंतक—

पंडित लक्ष्मी भूषण शिव भरोसे

ज्ञान सागर प्रेस, महाजन पाड़ा

मेरठ – शहर

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०
१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०
१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

अथ हरदेव का तात्कालिक भृगु प्रश्न भाषा

अर्थात प्रश्न कल्पवृक्ष ॥

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता होने वाली है खोटे दिन बीत गये श्रेष्ठ आने वाले हैं आराम होगा कार्य सफल होगा जिसकी चाहना है वह मिलेगा और यह जो तुमने चित्त में काम विचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम चल रहे हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता है। नेष्ट दशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रुता होती है सो अपनी रास पर जो दो तीन ग्रह नाकिस हैं उनका दान मंत्र जाप कराने से घर में आनन्द और मंगला—चार होगा और जीव की प्राप्ति होगी। यात्रा से लाभ होगा कार्य सफल होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पर व्रण यानी फोड़े फुन्सी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतवन करते हो।

हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष होता रहा लाभ मध्यम होता था सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा व्याधा और रंज नष्ट होंगे घर में खुशी होगा चित्त की चिंता चित्त में समा जाती है। समुद्र की तरंग सी नई नई उठती हैं सो वृथा जाती हैं। एक जीव में चित्त बहुत अधिक रहता है। अब ईश्वर चाहे तो कहीं से खुशी की बात सुनोगे उच्च पदवी प्राप्त होगी नाकिस ग्रहों का दान और सुबह शाम शिवजी का भजन किया करो और यह जो तुमने प्रश्न किया है उस काम में भी सफलता प्राप्त होगी मिलेगा गई सो गई अब राख रही कोई काम काबू से बाहर है कार्य सिद्ध होगा ईश्वर का भरासा करो काम में सफलता शीघ्र प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। प्रथम दशा न्यून थी, अब दशा श्रेष्ट आने वाली है। जीव की चिंता बनी रहती है। और लाभ का उद्योग विशेष सोचते हो परन्तु लाभ अधूरा होता है। और यह जो अब फिक्र है और खर्च भी दूर होगा। आराम होगा गुप्त वो भी मिलेगा सफलता प्राप्त होगी कष्ट नष्ट होगा। कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पञ्चाङ्ग में देखो सो अब उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ। और लिनादान के कार्य सिद्ध देर से होगा। इस कारण चावल, मिष्टान, स्वेतवस्त्र, रजनित, अर्थात श्रद्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ट मन की कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत बनने वाली है चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन किया करो प्रश्न श्रेष्ट है अन्जाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ट है

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कार्य आधीन से बाहर अर्थात काम काबू से बाहर है चिंता कष्ट कई जीव शत्रु ता गुप्त करे हैं परन्तु उनसे कुछ हो नहीं सकता एक जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हीन वार्तालाप सोचते हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चिन्तवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे हैं जीव की प्राप्ति होगी सफ ता प्राप्त होगी और चंगा होगा और यह जो अब चिंता है सब दूर हो जायगी पीत दान करो चने की दाल हल्दी पेला वस्त्र पेले पुष्प स्वर्ण श्रद्धानुसार गुप्त चिंता दूर होगी कार्य में सफलता होगी मनवांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र रहता है गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है यह कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष होगा जीव की लालसा जीव चिंता बनी रहती है तरह तरह के उदवेग चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परन्तु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परन्तु पाप ग्रहों का पूजन विधि पूर्वक वटुक भैरव का मन्त्र भी जपवाओ (मंत्र) ओं ऐं ह्रीं श्रीं वटुक भैर्वाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय ममरक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र के जाप से मनो—कामना पूर्ण होगी और यह जो चित्त को दीर्घ चिंता हैं सो काम होगा और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई नई वार्ता का चिन्तवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है॥

हे प्रच्छक तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मर्जी के माफ़िक कार्य होगा चित्त उस बिना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून थी जिसके कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च अधिक हो रहा है जीव का दुख रहता है काम दूसरे के काबू में है बनता बनता रुक जाता है और दो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर कैड़े हैं पंचाङ्ग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मन्त्र स्थिर चित्त करके पंडित जी से कराओ उसके कराने से कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और यह जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आ रहे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होग परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अन्जाम अच्छा दीखता है कार्य में भी लाभ होगा अगर हो सके तो शिवजी का पूजन नित्य किया करो।

इस समय के प्रश्न का फल यह है कि काम ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होना है गुप्त चिंता रहती है कभी चित्त में कुछ आता है कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशेष होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आराम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली है और श्रेष्ट आने वाली है परन्तु काम में देर है। इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के निमित्त मिष्टान वस्त्र कच्चा दूध पीपल को जल देना श्रेष्ट है कई महीने से भाग्य की हीनता यानी मध्यम है। पूजन करने से धन की प्राप्ति होगी और जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का दूर होना यह जो अब बहुत चिन्ता है काम जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम काबू से बाहर हो गया दशा मध्यम है

हे प्रच्छक तुम्हारी रास पर आजकल कई ग्रह नाकिस हैं पञ्चांग खोलकर देखो जब ऐसे ग्रह रास पर आते हैं तो लाभ कम होता है शत्रु उत्पन्न होते हैं मित्र व प्यारों से जुदाई होती है कष्ट और रंज होते हैं आमदनी होती हो तो रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो अधूरा होता है एक जीव लालसा की आस लगी रहती है व्यय दीर्घ लाभ मध्यम होता है काम होने को हो तो फिर तार भंग हो जाता है सो अब मध्यम ग्रहों का दान जाप कराओ आप भी यह मंत्र जपो उों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैरवाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा दान मंत्र जाप करने से यह जो तुम्हारे मन की कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर होकर पुत्रोंका लाभ होगा राज्यसे सफलता मित्र से प्रीत विशेष इतने उपाय न बनेगा दशा मध्यम रहेगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है अब दशा श्रेष्ट आने वाली है कामना पूर्ण होगी जो काम चित्त में धारण करा है वह सफल होगा चिंता दूर होगी मनो कामना पूर्ण होगी मित्रों से प्रीत होगी कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो कार्य चित्त में विचारा है काम ठीक बैठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम चल रही थी व्यय विशेष हुवा जीव की प्राप्ति होगी ऋण की न्यूनता हो प्रश्न श्रेष्ट है उद्योग व उपाय पहले तुमने बहुतेरे करे पर निर्फल गये काम काबू से बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश खबरी की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होगा यह जो प्रश्न विचारा है इसके वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी का पूजन कराओ चावल चांदी स्वेत वस्त्र स्वेत फूल का दान कराओ। तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं सो उनका उपाय करने से शीघ्र मन की कामना पूर्ण होगी और मन में एक जीव का ध्यान रहता है।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात् यह मामला है और जीवकी चिंता बनी रहती है और आदमी को भी चिंता बहुत है इज्जत का ख्याल है बड़े २ खर्च दीखते हैं और तुम परोपकारी सत्य वार्ता को पसंद करते हो छल छिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचते हो पर निर्फल हो जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब नवग्रहां का दान मंत्र जाप कराओ यह काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्ट देव का पूजन जाप कराने से मनोकामना पूर्ण होगी और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव की प्राप्ति भी होगी और लक्ष्मी का चमत्कार भी प्राप्त होगा और आराम होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न करने का यह मामला है स्वर दुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश आदि मिटे व्याधा टले जिसका प्रश्न है वह चीज मिलेगी या न मिलेगी मंगलाचार कब तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीव की चिंता रहती है वंश की वृद्धि हो आजकल तुम जो सोचते हो कुछ उसमें होता है कुछ दो तीन ग्रह रास पर नाकिस आरहे हैं सो उन का उपाय दान पुण्य जाप कराने से चित्त का मनोरथ सिद्ध होगा खुशी प्राप्त होगी काम पराये आधीन है अब तुम चींटीनाल जिमाओ श्रेष्ट है भूखों को भोजन दो कार्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनोरथ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सूरत और यह जो ऊपर से फिक्र दीखते हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशा मध्यम है

इस समय जो आपने प्रश्न किया है ऐसे स्वर में यह वार्ता है कि गुप्त चिंता बनी हुई है एक जीव की लालसा बनी रहती है धन से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो प्राप्त होगी या नहीं मंग ाचार की यह सूरत कब तक होगी जिसमे घर में चांदना हो आराम हो कब तक दिन कैड़े हैं गुप्त लाभ भी होगा यह झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चित्त में चिंता क्लेश रहते हैं कब दिन अच्छे आवेंगे ब्राह्मण को दही लडड्ड मिष्टान भोजन देने से कार्य में सफलता प्राप्त होगी और तुम्हें अपने इष्ट देव का पूजन घर में पित्र पीड़ा का उपाय शीघ्र करना चाहिये उपाय के कराने से अबके काम सिद्ध होगा इज्जत बढेगी सब से जीतोगे शत्रु रूपी ग्रह हानि कर रहे हैं दिन रात नई - २ वार्ता सोचते हो परन्तु सब निर्फल हो जाती हैं लेकिन अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

इस समय के प्रश्न का यह फल है
जीव चिंता भष्यिति धन न्यूनं दिने दिने
मंगला चार विलम्बस्य पराधीन कृत्ययो
राजद्वार कन्यायं स्थिर कार्य दृष्टयः
ग्रहपीड़ा च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः
मध्यम दशा में मध्यम कार्य हो जाते हैं
मन की वार्ता कब तक पूर्ण होगी मिलेगा या
नहीं रोजगार की हानि है कब तक वृद्धि होगी
आज कल दिन नाकिस हैं घर में चांदना
कब तक हो यह कार्य अब के भी सफल होगा
जिससे वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पर कई
ग्रह मध्यम हैं पत्रा देखो नाकिस ग्रहों का
दान मंत्र जाप छाया दान कराने से अब यह
मनोरथ सिद्ध होगा। तुम्हारा काम काबू से
बाहर है मामला ईश्वर के आधीन है परन्तु
जो बात तुम्हारे चित्त में और है यह ग्रह का
प्रभाव है परन्तु तुम्हारा अन्त में अच्छा है।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव की चिंता का है कार्य पराधीन काबू से बाहर हो गया बहुतेरे यत्न करते हो बहुतेरी बात सोचते हो मंगलाचार खुशी और वंश की वृद्धि राजद्वार विद्या की सिद्धि धन की जीत श्रेष्ठ दशा में होती है अब जो तुम्हें यह चिन्ता बनी है और लालसा जाव की है सो काम में विलंब है परन्तु मलेगा और सफल होगा अतः जतन उपाय से इच्छा पूर्ण होगी घर में स्वप्न भी दीखते हैं आराम की सूरत होगी जीव प्राप्ति होगी इज्जत का काम हो संदेह मिटेगा धन का मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांद का दान करो इश्वर चाहे तो उपाय करते ही इच्छा पूर्ण होगी और तुम परोपकारी हो सत्यवादी हो असत्य को पसंद नहीं करते हो बल्कि घृणा करते हो

हे प्रच्छक चित्त चिंता भविष्यति गृह क्लेश न संशयः धनमानम हानि पीड़ा देह दीर्घता मंगलाचारकं योगं वंशवृद्धि च प्राप्तये राजद्वारकं न्याय धन हानि विलम्बता इस प्रश्न का फल यह है तरह २ की वार्ता लाभ की सोचते हो काम काबू से बाहर दशा कई महीने से मध्यम है न्यून दशा में धन हानि विशेष व्यय लाभ मध्यम चिंता और क्लेश नुकसान होते हैं राजद्वार में भ काम मर्जी के माफिक नहीं होते सो काम कब तक होगा जो घर में चांदना और चमत्कारी हो वंश की और इज्जत की वृद्धि हो और वह मिले एक जीव में चित्त विशेष रहता है सो शिवजी का पूजन करना चींटीनाल देना श्रेष्ठ है और अपने हाथ से गुड़ गेहूं लाल वस्त्र लाल पुष्प आदि दान करके किसी ब्राह्मण को दो ईश्वर चाहे तो अब काम शीघ्र ही बन जावेगा और कामना पूर्ण होगी।

हे प्रच्छक गुप्त चिंता शरीरेन धन हानि च दृश्यते ग्रह पीड़ा भविष्यति दृश्यते भाग्य मंदता जीव चिंता च माप्नोति मंगला चार हर्षकं धन नष्ट न संदेहो जीव प्रश्ने च प्राप्तये इस समय दुस्वभाव स्वर है इसमें भाग्य की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या का लाभ रोजगार कृत्य पीड़ा का यत्न दुस्वभाव स्वर में इस प्रकार के प्रश्न होते हैं सो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर आजकल नाकिस चल रहे हैं पत्रे में देखो नाकिस हैं या नहीं जरूर हैं इन नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे भाग्य की वृद्धि का ताला खुले और उच्च पदवी प्राप्त हो तथा जीव की प्राप्ति होकर मंगलाचार के कार्यों में सफलता प्राप्त हो और गुप्त गई हुई चीज भी प्राप्त हो अंजाम कुशल है जिसे चाहोगे सो प्राप्त होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव रूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वर दुस्वभाव है प्रश्न दो तरह कैसे हैं एक शंका अलग हो जाना और दूसरा रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा रहता है तथा जीव की लालसा बनी रहती है जतन भी करते थे परन्तु वृथा चले जाते थे चिंता और इज्जत का ख्याल है और यह ख्याल है अब के भी काम होगा अथवा नहीं राजद्वार की उच्च पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम हैं भाग्य उदय होने को होता है लेकिन होते २ रुक जाता है अब तुम्हें पूजन श्री दुर्गादेवीजी का कराना चाहिए इसके कराने से शांति होगी। कई ग्रह रास पर कैड़े हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम में सफलता प्राप्त होगी कष्ट और बाधा नष्ट होकर लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वह मिलेगी

हे प्रच्छक दीर्घचिंता च प्राप्नोति जीव प्राप्ति न दृश्यते भयभीत हृदा पराधीनोपि कत्यया राजद्वारकंकार्यं धनव्यय भविष्यति अन्तकार्य महा सिद्धि भृगुणापरिभापतः। तुम पर बहुत दशा न्यून थी। अनेक प्रकार के फिक्र, जीव चिंता और धन का जाना तथा गुप्त क्लेश रहा। तुम्हारा चित्त एक जीव में तत्पर लगा रहता है। नई नई वार्ता लाभ के लिये सोचते हो परन्तु वृथा चली जाती है अब रोजगार की सूरत होगी यह जो जीव की लालसा बनी है सो पूर्ण हो परन्तु विलंब है देर से विजय प्राप्त होगी काम में लाभ होगा छाया दान गुड़ गेहूं लाल वस्त्र स्वर्ण दान के कराने से मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ का कार्य भी सिद्ध होगा काम देव की उनमत्तता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्रभाव है अन्त में कुशलता है। और भूमि का लाभ भी होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है दिन रात विचित्र तरह २ की वार्ता और लाभ सोचते रहते हो बनकर काम की आनन्द की सूरत मध्यम सी हो गई है ऐसी अवस्था में गुप्त चिंता और शत्रु का चित्त में भयसा तथा धन का च ।। जाना और मित्र का ख़्याल बना रहता है रोजगार का मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशा में बहुत बातों का ख्याल होता है तुम पक्षियों को अन्न बाजरा भोजन दो और श्री बटुक भैरव का पूजन कराओ यह मंत्र जपो उों ऐं ह्रीं क्लीं श्री विष्णुभगवान मम अपराध क्षमाय कुरु कुरु सर्व विघ्न विनाशाय ममकामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा । मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि होती है रोजगार श्रेष्ट होता है जीव की प्राप्ति होती है राजद्वार में विजय होती है गई हुई लक्ष्मी फिर वापिस आती है सर्व कामना सिद्ध होकर सुख शांति प्राप्त होने लगते हैं

हे प्रच्छक तुम्हारा काम बन जायगा स्वर दाहिना चलता है इस समय के प्रश्न का यह फल है कि चिंता और फिक्र मिटेगा गई सो गई अब राख रही जिसने उत्पन्न किया है वही विजय करेगा और जीव को प्राप्ति होगी राजद्वार से लाभ होगा खुशी होगी घर में मंगलाचार होगा एक मित्र में विशेष मन रहता है वह तुम्हारे आधीन रहेगा भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है कामदेव की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाता है अब जो तुम्हारी रास पर ग्रह मध्यम चल रहे हैं उनका दान निश्चय करके कराओ उसके बाद में सर्वसिद्धि होगी। काम होता २ रुक जाता है शत्रु हानि करते है काम और के आधीन है कई आदमियों से मिलके काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली है यह जो और काम है सो उस कार्य में भी विजय प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है ऐसी अवस्था में पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम दशा में मुशकिल होते हैं अर्थात् होता २ लाभ रुक जाता है। धन का नुकसान और धन हरण होता है राजद्वार से सफल होना मुशकिल हो जाता है उच्च पदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचते हो तार भंग हो जाता है और गुप्त शत्रु भांजी मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब इष्टदेव और घरके पित्रों के निमित्त कुछ जप दान आदि कराओ जिससे मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति होगी रोजगार में अधिक लाभ होगा और राजद्वार में सफलता होगी गई चीज मिले मङ्गल चार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य सफल न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न उत्तम श्रेणी का है जिससे अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा। श्रेष्ट दशा आने वाली है। उत्तम दशा गई। चीज का मिलना, रोजगार में लाभ, अन्न से लाभ और जीव की प्राप्ति तथा राजद्वार में विजय घर में मंगलाचार कष्ट व्याधा नष्ट, यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उनका उपाय जरा और श्रद्धा से करा दो और शाम को और चींटीनाल जब तक बने जिमाया करो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब तुम उपरोक्त कार्य शीघ्र करो ईश्वर चाहे तो काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ होगा एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है उसमें भी सफलता प्राप्त होगी सो आनन्द में बीतेगी कामदेव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है।

हे प्रच्छक अब क्या फिक्र करते हो तुम्हें खुश खबरी प्राप्त होने वाली है गई सो गई अब राख रही अब बहुत देगा वह मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्तु एक फिक्र भारी दीखता है ऊपर से खर्च आवे है और पास धन विशेष नहीं दीखता परन्तु चिंता मत करना क्यों कि तुम्हारा काम बड़ी इज्जत के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त बहुत रहता है वो भी चित्त से प्यार करे है अगर तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहते हो तो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ और सट्टी चावल दही दान करो जिसके करने से तुम्हारा काम शीघ्र सिद्ध होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांदना होगा और एक काम तुम से गुप्त मे गुप्त नाकिस बना था सो भी नष्ट होगा सो ईश्वर का ध्यान रक्खा करो कुशलता रहेगी

हे प्रच्छक तुम पर बहुत दिनों से दशा नाकिस थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ की सूरत में हानि पैदा होगई गुप्त शत्रु बुराई करते हैं अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने को हो रही है दशा नाकिस में धन माल का निकल जाना पीड़ा का घर मेंबास होना इज्जत का भय होना हुवा हुबाया मंगलाचार का हट जाना और राजद्वार की चिंता होना यह सब बात नाकिस दशा में होती हैं अब तुम सायंकाल को घृत का दीपक शिवजी के मन्दिर में प्रज्वलित किया करो और जलका लोटा भर के शिवजी को और पीपल पर चढ़ाया करो और इतवार को ब्राह्मण जिमाओ अथवा व्रत किया करो कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पत्रे में देखो सो नाकिस दशा का फल न्यून हो जायगा जो उपरोक्त कार्य करो उसके करने से जो तुम्हारी मनो कामना है वह पूर्ण होगी और कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक अब तुम्हारे खोटे दिन व्यतीत हो गये। अच्छे आने वाले हैं अब तक तुम पर बहुत नाकिस दशा चल रही थी। नाकिस दशा में ही ऐसे काम होते हैं। जो फिक्र तुम पर है। बहुत नुकसान उठाया और लाभ कम रहा पीड़ा रूपी क्लेश में धन खर्च हुआ और चीज निकल गई। इज्जत का भय हुवा परन्तु तुम्हें अब अपने इष्ट देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर ग्रह का दान निश्चय करके कराना चाहिये। फिर यत्न के कराने से तुम्हें जल्दी और नये लाभ होंगे। जीव की प्राप्ति होगी मित्र से मुला-कात जो है विशेष होगी ग्रह की पीड़ा नष्ट होगी। शत्रु का नाश होगा और ये जो मन की कामना सो पूर्ण होगी और बड़े २ फिक्र जो ऊपर से खर्च के दीख रहे हैं। सो सब आनन्द में कांटा सा निकल जायगा कुशलता प्राप्त होगी, काम सिद्ध होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा इस समय का प्रश्न बहुत श्रेष्ट दीखता है बुरे दिन गये और अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पर दो तीन ग्रह मध्यम आ गये हैं और तुमने उनका दान जप कराया नहीं है इस कारण ऐसे फिक्र चिंता उठाई लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीड़ा की चिंता चित्त में, भयसा होना, काम उम्दा लाभ का अभी नहीं बना, जीव की चिंता है, वंश की वृद्धि और मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार का चिंता है अब छाया दान और चने की दाल पेला वस्त्र हल्दी स्वर्णदान श्रद्धानुसार कराना चाहिये ऊपर के दान पुन्य के कराने से ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ती होगी लाभ का रास्ता खुलेगा भूमि से लाभ और पीड़ा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में सफलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी के अनुसार काम होने में देर है कष्ट रूपी रंज, क्लेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जाता है ऐसी सब बातें मध्यम दशा में ही होती हैं अगर कभी कहीं गवन हो जाय तो भी ताज्जुब की बात नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है इस समय उसका प्राप्त होना कठिन प्रतीत होता है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अभिलाषा है अब तुम नवग्रह का पूजन दान करो उसके कराने से दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ठ आयेगी सो सब काम उत्तम दशा में सफल होंगे जीव का लाभ होगा गई हुई चीज फिर प्राप्त होगी कष्ट बाधा नष्ट होगी, उच्च पदवी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चितवन करतेहो चित्तकी वार्ता चित्तमें समा जाती है अब शीघ्र ही खुशी की वार्ता सुनने में आवेगी

हे प्रच्छक जब दशा जीव पर नाकिस आती है और नाकिस ग्रह चौथे आठवे बारहवें में हो जाते हैं तब ऐसे ही काम होते हैं। खर्च विशेष होता है लाभ कम होता है और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला हुआ धन देर से प्राप्त होगा। जिस काम को करना विचारते हो, सो समझ कर करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलंब है। एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पर कैड़े हैं उनका पत्रा देख कर यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख होगा तुम्हें उन ग्रहों का यत्न कराना चाहिये यत्न के कराने से तुम्हें आराम होगा उच्च पदवी प्राप्त होगी, काम में फायदा होगा एक जगह विशेष माल मिलेगा। विलंब से खातर जमा रखो तुम ईश्वर का भजन किया करो भूलो मत।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रमण रहती है। ईश्वर को सत्य नहीं मानते हो जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा। उसका भजन किया करो अन्त में आशा पूर्ण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आराम की सूरत होने वाली है एक काम में विशेष लाभ होगा परन्तु अब मंगल के ब्रत किया करो और पक्षियों को बाजरा भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूर ग्रहों का जप दान कराते रहा करो ऐसा उपाय कराते रहने से मन वांछित फल मिलेगा। कार्ज सिद्ध होंगे जो बड़े खर्च के काम समझ रक्खे हैं वो भी कांटा सा होकर आनन्द में निकल जायगा काम देव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून हो जाती है चिंता न करो उसने चाहा तो शीघ्र ही कुशलता प्राप्त होंगी।

हे प्रच्छक तुम्हारे इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत शीघ्र बनेगी और आराम की सूरत नज़र आती है पिछले साल कुछ महीने मध्यम रहे खर्च विशेष रहता था और आमदनी न्यून होती थी उसने चाहा तो अब भाग्य उदय होगा और काम में सफलता प्राप्त होगी थोड़ा विलम्ब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगाकर किया करो और घृत सांभर श्रद्धा अनुसार दान करो जिसके कराने से तुम्हें फिर नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा चिंताएं मिटेंगी बाधाएं टलेंगी और खुशी प्राप्त होगी एक काम तुमसे न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ती होगी नवीन २ वार्ता की समुद्र की तरंगसी चित्त में उठती हैं और समा जाती हैं

हे प्रच्छक तुम्हारे कार्य में विलंब है काम अभी ठीक न होगा दशा नाकिस चल रही है कई ग्रह नाकिस हैं पंचांग खोल कर देखा सोचते हो कुछ और होता है कुछ । कई वार्ता की चता बनी हुई है । जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी क्लेश की । परन्तु तुम सत्यवादी हो सत्य बोलने को पसंद करते हो झूंट से क्रोधित होते हो पराये काम मन से प्रीत लगा कर करते हो किसी का बुरा नहीं चाहते हो । तुम्हें विद्या कम है परन्तु बुद्धि अकल बड़े विद्वानों से विशेष है हर एक की बात की झूंट सत्य का परीक्षा समझलेते हो एक काम न्यून बनगया था सो ईश्वर की भक्ति विशेष करो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ ऐसा कराने से तुम्हें मनवांछित फल मिलेगा और लाभ होगा । तुमने अपने ऊपर बड़ा जो फिक्र समझ रक्खा है सब काम आनन्द में हो जायगा ।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न शगुण इस बक्त बहुत श्रेष्ट है। तुम्हें बिना कारण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न हो जाता है। बुद्धि भ्रमण हो जाती है । गया सो गया फिर आयेगा मिलेगा क्या मिलेगा, आराम मिलेगा धन की प्राप्ति होगी, घर में मंगलाचार होगा पीड़ा का नाश होगा जीव की खुशी और प्राप्ती होगी अकस्मात खुश खबरी सुनने को मिलेगी तुम अपने इष्ट देव मित्र देवताओं के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न, कच्चा दूध, मावश्या को पिलाते रहा करो इस प्रकार दान पुन्य कराने से रोजगार बढ़ेगा उच्च पदवी पाने में सफल होगे एक जीव का ध्यान बना रहता है मित्र के ध्यान में चित्त बहुत रहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परन्तु अकल बुद्धि तेज हैं किसी का बुरा नहीं चाहते हो सत्य वार्ता को पसन्द करते हो खर्च है अन्जाम कुशल है राजद्वार से अन्त में विजय है

हे प्रच्छक तुम्हारे खोटे दिन गये अब श्रेष्ठ आने वाले हैं। तुमने जो काम सोच रक्खा है उसे देख भाल कर सोच समझ कर करना क्यों कि तुम पर नाकिस दशा चल रही हैं अब आगे को दशा बदलेगी जो ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस चल रहे हैं उनका पूजन जाप विधि पूर्वक कराना चाहिए उसके करने के पश्चात उत्ताम दशा आयेगी लाभ की सूरत होगी तुम्हारे पिछले दिन बहुत नाकिस दशा में गुजरे खर्च विशेष रहा लाभ न्यून रहा मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता था यह सब नाकिस दशा का प्रभाव है ऐसी दशा में कार्य ठीक नहीं होता है उत्ताभ दशा आने पर लाभ अधिक होगा मित्रों से प्रीति बढ़ेगी तथा जीव की प्राप्ति होगी गई हुई चीज वापस मिलेगी। तुम रामनाम की चून की गोली बना कर बहते जल में प्रवेश किया करो यह बड़ा श्रेष्ठ काम है इससे भी कार्य में सिद्ध होगी

हे प्रच्छक इस समय तुम्हारी रास पर कई ग्रह नाकिस मौजूद हैं ऐसी अवस्था में शत्रु उत्पन्न होते हैं, आमदनी होती २ रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो वहां पर अधूरा भी नहीं होता है ऐसी दशा में लाभ कम होते हैं प्यारों से जुदाई होती है चिंता रूपी कष्ट रहता है जीव की लालसा बनी रहती है जीव चिंता तथा तरह २ के उद्वेग तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं तुमको कई भारी फिक्र लगे हुए हैं तुम पर नाकिस दशा चल रही है यत्न उपाय कराओ उपाय से शीघ्र दशा बदलेगी तत्पश्चात जीव की प्राप्ति होगी कार्य में सफलता प्राप्त होगी यह जो चिंता है दूर होगी तुम सर्दी में कम्बल अथवा गर्म वस्त्र का दान करो इससे लाभ की सूरत होगी ग्रह उपाय जरूर कराओ यत्न उपाय से जीव लाभ होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्नानुसार तुमको दीर्घ चिंता है। प्रश्न दो तरह के से हैं गई चीज मिलना दूसरा लाभ प्राप्ति है तुम्हारे चित्त में दिन रात समुद्र की तरंग सी उठती हैं तुम जो विचारते हो वह होता नहीं तुमको गुप्त चिंता लगी रहती है और इज्जत का विशेष ध्यान रहता है मन के माफिक लाभ नहीं होता है एक जीव में ध्यान विशेष रहता है तुम पर दशा मध्यम चल रही हे पञ्चांग में देखकर उपाय कराओ। उपाय के कराने से शीघ्र दशा बदलेगी उसके बाद लाभ के कार्य होंगे जीव प्राप्ति होगी एक मित्र द्वारा लाभ कार्य होगा तुम गऊ सेवा किया करो बन सके तो संध्या समय गौओं को अन्न मिष्टान मिलाय रोटी बनवाय नित्य जिमाया करो ऐसा करने से शीघ्रति शीघ्र तुम्हारी दशा बदलेगी और प्रत्येक कार्य में लाभ होगा तथा घरमें चांदना सा दिखाई देगा अर्थात सर्व प्रकार से आनन्द होगा

हे प्रच्छक जो हो गया सो हो गया। अब तुम्हें कार्य चतुराई बुद्धिमानी तथा सोच विचार के करना चाहिए क्यों कि तुम पर नासिक दशा चल रही है तुम्हें चिंता फिक्र बहुत रहता है ग्रहों का उपाय कराओ उपाय के कराने से दशा बदलेगी तत्पश्चात कार्य सिद्ध होगा राजद्वार से खुशी प्राप्त होगी जीव की प्राप्ति होगी लाभ और मङ्गलाचार होगा तुम पर बहुत दिन से यह दशा चल रही है तुम इन ग्रहों का उपाय पहले से कर देते तो निहाल हो जाते कामदेव की प्रबलता में बुद्धि न्यून हो जाती है कार्य होते २ रुक जाता है कार्य में शत्रु रुपी ग्रह हानि करा रहे हैं जो कार्य सोचा है विलंब से होगा तुम श्री दुर्गा देवी का भजन पूजन किया करो बन सके तो हवन कराया करो ऐसा करने से नये २ लाभ होंगे कष्टवाधा नष्ट होगी तथा सब प्रकार का आनन्द होगा तम्हारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है तुम पर दशा बहुत दिन से मध्यम थी खर्च विशेष हुवा लाभ कम हुआ अब तुमको दशा श्रेष्ट आने वाली है तुम्हारी कामना पूर्ण होगी तुमने जो काम विचारा है काम ठीक बैठेगा तुम्हारा प्रश्न उत्तम है तुमको भाग्य की वृद्धि होगी घर में मंगलाचार होगा राजद्वार से न्याय की आशा तथा तुम्हें किसी प्यारे और धन की रोजगार की चिंता बनी रहती है जो सोचते हो सिद्ध नहीं होता इस कारण तुम्हारे ऊपर जो ग्रह दशा चल रही है उसका यत्न उपाय कराओ उपाय होने पर शीघ्र दशा अच्छी आवेगी अच्छी दशा के आने पर लाभ की नई नई सूरत बनेंगी तथा वंश की वृद्धि होगी तुम ईश्वर का भजन किया करो मंगल का वृत रक्खा करो और अनाथों की सहायता किया करो इससे सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होंगे।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि चलायमान रहती है कभी कुछ सोचते हो और कभी कुछ बुद्धि स्थिर नहीं रहती है और तुम्हारा किसी कार्य में मन नहीं लगता है तुम्हें दशा न्यून चल रही है ऐसी दशा में चिंता क्लेश फिकर कष्ट रहते हैं लाभ कम होता है खर्च विशेष रहता है अनेक लाभ कार्य सोचते हो लेकिन इच्छा के अनुसार लाभ नहीं होता है अर्थात होता २ रुक जाता है तुमको एक जीव की चिंता भी लगी हुई है राज द्वार का मामला भी दीखे है कुत्य का भारी फिकर लगा है यह सब ग्रह दशा का प्रभाव है तम्हारा दान पुण्य में भी चित्त नहीं है तुम्हें उधर ध्यान देना चाहिये अगर जो बन सके तुम दान अवश्य किया करो और भक्ति पूर्वक ईश्वर का भजन पूजन भी किया करो तथा नाकिस दशा का उपाय अवश्य कराओ उपाय पूजन दान पुण्य करनेसे तुम्हारी दशा बदलेगी कार्य की सिद्धि होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ट है जो हो गया सो हो गया अब चिंता और फिक्र मिटेगा तुम्हारा कार्य सफल होगा जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से खुशी प्राप्त होगी और भूमि मे लाभ होगा मंगलाचार और प्रसन्नता होगी तम्हारा एक जीव में चित्त बहुत रहता है तुम तरह २ की वार्ता का चतवन करते हो तुम्हारा चित्त चलायमान रहता है तुमको बहुत दिन से दशा मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है तुम जो काम सोचते हो उसमें तारभंग हो जाता है गुप्त शत्रु तुमको नुकसान पहुंचाते हैं अर्थात ऊपर से तुमसे मीठी २ बात करते हैं और अन्दर से काट करते हैं तुमने एक काम बहुत दिनों से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तो अवश्य होगा इष्टदेव पित्रों के निमित्त दान पूजन कराओ उपाय न कराने से कार्य सिद्ध देर से होगा पूर्णमासी को सत्य नारायण का व्रत रक्खा करो कथा कराओ इसके कराने से मनोकामना पूर्ण होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न श्रेष्ट है तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा तुमको जीव और लाभ की चिंता बनी रहती है तुमने लाभ का उद्योग किया परन्तु लाभ कम होता है सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा कष्ट व्याधा रंज आदि नष्ट होंगे। घर में खुशी होगी तुम तरह २ का उद्योग सोचते हो परन्तु चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है पीड़ा की चिंता चित्त में भय रहता है काम उत्तम लाभ का अभी नहीं बना और एक जीव में चित्ता विशेष रहता है राजद्वार का भी ध्यान बना रहता है दशा मध्यम चल रही है उसका श्रद्धानुसार उपाय करो और बन सके तो शिव मन्दिर में नित्य घृत का दीपक जलाया करो सवेरे ही मन्दिर की सफाई किया करो अथवा सोमवार का व्रत किया करो ईश्वर चाहे तो मनो कामना पूर्ण होगी बाधायें नष्ट कष्ट आदि समाप्त होंगी उच्च पदवी मिलेगी जीव प्राप्ति होगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता होने वाली है खोटे दिन बीत गये श्रेष्ट आने वाले हैं आराम होगा कार्य सफल होगा जिसकी चाहना है वह मिलेगा और यह जो तुमने चित्त में काम बिचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम चल रहे हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता है। नेष्ट दशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रुता होती है सो अपनी रास पर जो दो तीन ग्रह नाकिस हैं उनका दान मंत्र जाप कराने से घर में आनन्द और मंगला—चार होगा और जीव की प्राप्ति होगी। यात्रा से लाभ होगा कार्य सफल होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पर व्रण यानी फोड़े फुन्सी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतवन करते हो।

हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष होता रहा लाभ मध्यम होता था सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा व्याधा और रंज नष्ट होंगे घर में खुशी होगा। चित्त की चिंता चित्त में समा जाती है। समुद्र की तरंग सी नई नई उठती हैं सो वृथा जाती हैं। एक जीव में चित्त बहुत अधिक रहता है। अब ईश्वर चाहे तो कहीं से खुशी की बात सुनोगे उच्च पदवी प्राप्त होगी नाकिस ग्रहों का दान और सुबह शाम शिवजी का भजन किया करो और यह जो तुमने प्रश्न किया है उस काम में भी सफलता प्राप्त होगी मिलेगा गई सो गई अब राख रही कोई काम काबू से बाहर है कार्य सिद्ध होगा ईश्वर का भरोसा करो काम में सफलता शीघ्र प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। प्रथम दशा न्यून थी, अब दशा श्रेष्ट आने वाला है। जीव की चिंता बनी रहती है। और लाभ का उद्योग विशेष सोचते हो परन्तु लाभ अधूरा होता है। और यह जो अब फिक्र है और खर्च सो दूर होगा। आराम होगा गुप्त वो भी मिलेगा सफलता प्राप्त होगी कष्ट नष्ट होगा। कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पञ्चाङ्ग में देखो सो अब उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ। और लिनादान के कार्य सिद्ध देर से होगा। इस कारण चावल, मिष्टान, स्वेतवस्त्र, रजनित, अर्थात श्रद्धा प्रमाण चांदी दान का करना वहुत श्रेष्ट मन की कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत बनने वाली है चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन किया करो प्रश्न श्रेष्ट है अन्जाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ट है

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कार्य आधीन से बाहर अर्थात काम काबू से बाहर है चिंता कष्ट कई जीव शत्र ता गुप्त करे हैं परन्तु उनसे कुछ हो नहीं सकता एक जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हीन वार्तालाप सोचते हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चिन्तवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे हैं जीव की प्राप्ति होगी सफलता प्राप्त होगी और चंगा होगा और यह ज अब चिंता है सब दूर हो जायगी पीत दान करो चने की दाल हल्दी पेला वस्त्र पेले पुष्प स्वर्ण श्रद्धानुसार गुप्त चिंता दूर होगी कार्य में सफलता होगी मनबांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र रहता है गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है यह कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष होगा जीव की लालसा जीव चिंता बनी रहती है तरह तरह के उदवेग चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परन्तु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परन्तु पाप ग्रहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मन्त्र भी जपवाओ (मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बटुक भैर्वाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय ममरक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र के जाप से मनो—कामना पूर्ण होगी और यह जो चित्त को दीर्घ चिंता हैं सो काम होगा और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई नई वार्त्ता का चिन्तवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है॥

हे प्रच्छक तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मर्जी के माफ़िक कार्य होगा चित्त उस बिना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून थी जिसके कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च अधिक हो रहा है जीव का दुख रहता है काम दूसरे के काबू में है बनता बनता रुक जाता है और दो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर कैड़े हैं पंचाङ्ग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मन्त्र स्थिर चित्त करके पंडित जी से कराओ उसके कराने से कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और यह जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आ रहे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगा परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अन्जाम अच्छा दीखता है कार्य में भी लाभ होगा अगर हो सके तो शिवजी का पूजन नित्य किया करो।

इस समय के प्रश्न का फल यह है कि काम ठीक बैंठेगा या न बैंठेगा इज्जत का भय हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होना है गुप्त चिंता रहती है कभी चित्त में कुछ आता है कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशेष होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आराम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली है और श्रेष्ट आने वाली है परन्तु काम में देर है। इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के निमित्त मिष्टान वस्त्र कच्चा दूध पीपल को जल देना श्रेष्ट है कई महीने से भाग्य की हीनता यानी मध्यम है। पूजन करने से धन की प्राप्ति होगी और जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का दूर होना यह जो अब बहुत चिन्ता है काम जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम काबू से बाहर हो गया दशा मध्यम है

हे प्रच्छक तुम्हारी रास पर आजकल कई ग्रह नाकिस हैं पञ्चांग खोलकर देखो जब ऐसे ग्रह रास पर आते हैं तो लाभ कम होता है शत्रु उत्पन्न होते हैं मित्र व प्यारों से जुदाई होती है कष्ट और रंज होते हैं आमदनी होती होती रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो अधूरा होता है एक जीव लालसा की आस लगी रहती है व्यय दीर्घ लाभ मध्यम होता है काम होने को हो तो फिर तार भंग हो जाता है सो अब मध्यम ग्रहों का दान जाप कराओ आप भी यह मंत्र जपो ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैरवाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा दान मंत्र जाप करने से यह जो तुम्हारे मन की कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर होकर पुत्रोंका लाभ होगा राज्यसे सफलता मित्र से प्रीत विशेष इतने उपाय न बनेगा दशा मध्यम रहेगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है अब दशा श्रेष्ट आने वाली है कामना पूर्ण होगी जो काम चित्त में धारण करा है वह सफल होगा चिंता दूर होगी मनो कामना पूर्ण होंगी मित्रों से प्रीत होगी कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो कार्य चित्त में विचारा है काम ठीक बठेंगे दशा बहुत दिनों मे मध्यम चल रही थी व्यय विशेष हुवा जोव की प्राप्ति होगी ऋण की न्यूनता हो प्रश्न श्रेष्ट है उद्योग व उपाय पहले तुमने बहुतेरे करे पर निर्फल गये काम काबू से बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश खबरी की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होगा यह जो प्रश्न विचारा है इसके वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी का पूजन कराओ चावल चांदी स्वेत वस्त्र स्वेत फूल का दान कराओ। तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं सो उनका उपाय करने से शीघ्र मन की कामना पूर्ण होगी और मन में एक जीव का ध्यान रहता है।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात् यह मामला है और जीवकी चिंता बनी रहती है और आदमी को भी चिंता बहुत है इज्जत का ख्याल है बड़े २ खर्च दीखते हैं और तुम परोपकारी सत्य वाता को पसंद करते हो छल छिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचते हो पर निर्फल हो जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब नवग्रहा का दान मंत्र जाप कराओ यह काम ईश्वर चाहे ता ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्ट देव का पूजन जाप कराने से मनोकामना पूर्ण होगी और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव की प्राप्ति भी होगी और लक्ष्मी का चमत्कार भी प्राप्त होगा और आराम होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न करने का यह मामला है स्वर दुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश आदि मिटे व्याधा टले जिसका प्रश्न है वह चीज मिलेगी या न मिलेगी मंगलाचार कब तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीव की चिंता रहती है वंश की वृद्धि हो आजकल तुम जो सोचते हो कुछ उसमें होता है कुछ दो तीन ग्रह रास पर नाकिस आरहे हैं सो उन का उपाय दान पुण्य जाप कराने से चित्त का मनोरथ सिद्ध होगा खुशी प्राप्त होगी काम पराये आधीन है अन्न तुम चींटीनाल जिमाओ श्रेष्ट है भूखों को भोजन दो कार्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनोरथ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सूरत और यह जो ऊपर से फिक्र दीखते हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशा मध्यम है

इस समय जो आपने प्रश्न किया है ऐसे स्वर में यह वार्ता है कि गुप्त चिंता बनी हुई है एक जीव की लालसा बनी रहती है धन से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो प्राप्त होगी या नहीं मंग ाचार की यह सूरत कब तक होगी जिसमे घर में चांदना हो आराम हो कब तक दिन कैड़े हैं गुप्त लाभ भी होगा यह झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चित्त में चिंता क्लेश रहते हैं कब दिन अच्छे आवेंगे ब्राह्मण को दही लडडू मिष्टान भोजन देने से कार्य में सफलता प्राप्त होगी और तुम्हें अपने इष्ट देव का पूजन घर में पित्र पीड़ा का उपाय शीघ्र करना चाहिये उपाय के कराने से अबके काम सिद्ध होगा इज्जत बढेगी सब से जीतोगे शत्रु रूपी ग्रह हानि कर रहे हैं दिन रात नई - २ वार्ता सोचते हो परन्तु सब निष्फल हो जाती हैं लेकिन अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

इस समय के प्रश्न का यह फल है
जीव चिंता भष्यिति धन न्यूनं दिने दिने
मंगला चार विलम्बस्य पराधीन कृत्ययो
राजद्वार कन्यायं स्थिर कार्य दृष्टयः
ग्रहपीड़ा च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः
मध्यम दशा में मध्यम कार्य हो जाते हैं
मन की वार्ता कब तक पूर्ण होगी मिलेगा या
नहीं रोजगार की हानि है कब तक वृद्धि होगी
आज कल दिन नाक़िस हैं घर में चांदना
कब तक हो यह कार्य अब के भी सफल होगा
जिससे वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पर कई
ग्रह मध्यम हैं पत्रा देखो नाकिस ग्रहों का
दान मंत्र जाप छाया दान कराने से अब यह
मनोरथ सिद्ध होगा। तुम्हारा काम काबू से
बाहर है मामला ईश्वर के आधीन है परन्तु
जो बात तुम्हारे चित्त में और है यह ग्रह का
प्रभाव है परन्तु तुम्हारा अन्त में अच्छा है।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव को चिंता का है कार्य पराधीन काबू से बाहर हो गया बहुतेरे यत्न करते हो बहुतेरी बात सोचते हो मंगलाचार खुशी और वंश की बृद्धि राजद्वार विद्या को सिद्धि धन को जीत श्रेष्ट दशा में होती है अब जो तुम्हें यह चिन्ता बनी है और लालसा जाव की सो काम में विलंब है परन्तु मिलेगा और सफल होगा अतः जतन उपाय से इच्छा पूर्ण होगी घर में स्वप्न भी दीखते हैं आराम की सूरत होगी जीव प्राप्ति होगी इज्जत का काम हो संदेह मटेगा धन का मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांद का दान करो इश्वर चाहे तो उपाय करते ही इच्छा पूर्ण होगी और तुम परोपकारी हो सत्यवादी हो असत्य को पसंद नहीं करते हो बल्कि घृणा करते हो

हे प्रच्छक चित्त चिंता भविष्यति गृह क्लेश न संशयः धनमानम हानि पीड़ा देह दीर्घता मंगलाचारकं योगं वंशवृद्धि च प्राप्तये राजद्वारकं न्याय धन हानि विलम्बता इस प्रशन का फल यह है तरह २ की वार्ता लाभ की सोचते हो काम काबू से बाहर है दशा कई महीने से मध्यम है न्यून दशा में धन हानि विशेष व्यय लाभ मध्यम चिंता और क्लेश नुकसान होते हैं राजद्वार में भ काम मर्जी के माफिक नहीं होते सो काम कब तक होगा ज घर में चादना और चमत्कारी हो वंश की और इज्जत की वृद्धि हो और वह मिले एक जीव में चित्त विशेष रहता है सो शिवजी का पूजन करना चींटीनाल देना श्रेष्ठ है और अपने हाथ से गुड़ गेहूं लाल वस्त्र लाल पुष्प आदि दान करके किसी ब्राह्मण को दो ईश्वर चाहे तो अब काम शीघ्र ही बन जावेगा और कामना पूर्ण होगी।

हे प्रच्छक गुप्त चिंता शरीरेन धन हानि च दृश्यते ग्रह पीड़ा भविष्यति दृश्यते भाग्य मंदता जीव चिंता च माप्नोति मंगला चार हर्षकं धन नष्ट न संदेहो जीव प्रश्ने च प्राप्तये इस समय दुस्वभाव स्वर है इसमें भाग्य की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या का लाभ रोजगार कृत्य पीड़ा का यत्न दुस्वभाव स्वर में इस प्रकार के प्रश्न होते हैं सो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर आजकल नाकिस चल रहे हैं पत्रे में देखो नाकिस हैं या नहीं जरूर हैं इन नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे भाग्य की वृद्धि का ताला खुले और उच्च पदवी प्राप्त हो तथा जीव की प्राप्ति होकर मंगलाचार के कार्यों में सफलता प्राप्त हो और गुप्त गई हुई चीज भी प्राप्त हो अंजाम कुशल है जिसे चाहोगे सो प्राप्त होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव रूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वर दुस्वभाव है प्रश्न दो तरह कैसे हैं एक शंका अलग हो जाना और दूसरा रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा रहता है तथा जीव की लालसा बनी रहती है जतन भी करते थे परन्तु वृथा चले जाते थे चिंता और इज्जत का ख्याल है और यह ख्याल है अब के भी काम होगा अथवा नहीं राजद्वार की उच्च पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम हैं भाग्य उदय होने को होता है लेकिन होते २ रुक जाता है अब तुम्हें पूजन श्री दुर्गादेवीजी का कराना चाहिए इसके कराने से शांति होगी। कई ग्रह रास पर कैड़ेहैं उनका उपाय कराना चाहिये काम में सफलता प्राप्त होगी कष्ट और बाधा नष्ट होकर लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वह मिलेगी

हे प्रच्छक दीर्घचिंता च प्राप्नोति जीव प्राप्ति न दृश्यते भयभीत हृदा पराधीनोपि कृत्यया राजद्वारकंकार्यं धनव्यय भविष्यति अन्तकार्यं महा सिद्धि भृगुणापरिभाषतः। तुम पर बहुत दशा न्यून थी। अनेक प्रकार के फिक्र, जीव चिंता और धन का जाना तथा गुप्त क्लेश रहा। तुम्हारा चित्त एक जीव में तत्पर लगा रहता है। नई नई वार्ता लाभ के लिये सोचते हो परन्तु वृथा चली जाती है अब रोजगार की सूरत होगी यह जो जीव की लालसा बनी है सो पूर्ण हो परन्तु विलंब है देर से विजय प्राप्त होगी काम में लाभ होगा छाया दान गुड़ गेहूं लाल वस्त्र स्वर्ण दान के कराने से मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ का कार्य भी सिद्ध होगा काम देव की उनमत्तता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्रभाव है अन्त में कुशलता है। और भूमि का लाभ भी होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है दिन रात विचित्र तरह २ की वार्ता और लाभ सोचते रहते हो बनकर काम की आनन्द की सूरत मध्यम सी हो गई है ऐसी अवस्था में गुप्त चिंता और शत्रु का चित्त में भयसा तथा धन का चला जाना और मित्र का ख्याल बना रहता है रोजगार का मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशा में बहुत बातों का ख्याल होता है तुम पक्षियों को अन्न बाजरा भोजन दो और श्री बटुक भैरव का पूजन कराओ यह मंत्र जपो ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री विष्णुभगवान मम अपराध क्षमाय कुरु कुरु सर्व विघ्न विनाशाय ममकामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा। मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि होती है रोजगार श्रेष्ट होता है जीव की प्राप्ति होती है राजद्वार में विजय होती है गई हुई लक्ष्मी फिर वापिस आती है सर्व कामना सिद्ध होकर सुख शांति प्राप्त होने लगते हैं

है प्रच्छक तुम्हारा काम बन जायगा स्वर दाहिना चलता है इस समय के प्रश्न का यह फल है कि चिंता और फिक्र मिटेगा गई सो गई अब राख रही जिसने उत्पन्न किया है वही विजय करेगा और जीव को प्राप्ति होगी राजद्वार से लाभ होगा खुशी होगी घर में मंगलाचार होगा एक मित्र में विशेष मन रहता है वह तुम्हारे आधीन रहेगा भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है कामदेव की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाता है अब जो तुम्हारी रास पर ग्रह मध्यम चल रहे हैं उनका दान निश्चय करके कर अ उसके बाद में सर्वसिद्धि होगी । काम होता २ रुक जाता है शत्रु हानि करते है काम और के आधीन है कई आदमियों से मिलके काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली है यह जो और काम है सो उस कार्य में भी विजय प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है ऐसी अवस्था में पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम दशा में मुशकिल होते हैं अर्थात् होता २ लाभ रुक जाता है। धन का नुकसान और धन हरण होता है राजद्वार से सफल होना मुशकिल हो जाता है उच्च पदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचते हो तार भंग हो जाता है और गुप्त शत्रु भांजी मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब इष्टदेव और घरके पित्रों के निमित्त कुछ जप दान आदि कराओ जिससे मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति होगी रोजगार में अधिक लाभ होगा और राजद्वार में सफलता होगी गई चीज मिले मङ्गल चार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य सफल न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न उत्तम श्रेणी का है जिससे अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा। श्रेष्ट दशा आने वाली है। उत्तम दशा गई। चीज का मिलना, रोजगार में लाभ, अन्न से लाभ और जीव की प्राप्ति तथा राजद्वार में विजय घर में मंगलाचार कष्ट व्याधा नष्ट, यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उनका उपाय जरा और श्रद्धा से करा दो और शाम को और चींटीनाल जब तक बने जिमाया करो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब तुम उपरोक्त कार्य शीघ्र करो ईश्वर चाहे तो काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ होगा एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है उसमें भी सफलता प्राप्त होगी सो आनन्द में बीतेगी कामदेव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है।

हे प्रच्छक अब क्या फिक्र करते हो तुम्हें खुश खबरी प्राप्त होने वाली है गई सो गई अब राख रही अब बहुत देगा वह मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्तु एक फिक्र भारी दीखता है ऊपर से खर्च आवे है और पास धन विशेष नह दीखता परन्तु चिंता मत करना क्यों कि तुम्हारा काम बड़ी इज्जत के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चिन्त बहुत रहता है वो भी चित्त से प्यार करे है अगर तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहते हो तो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जि० ओ और सट्टी चावल दही दान करो जिसके करने से तुम्हारा काम शीघ्र सिद्ध होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांदना होगा और एक काम तुम से गुप्त से गुप्त नाकिस बना था सो भी नष्ट होगा सो ईश्वर का ध्यान रक्खा करो कुशलता रहेगी

हे प्रच्छक तुम पर बहुत दिनों से दशा नाकिस थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ की सूरत में हानि पैदा होगई गुप्त शत्रु बुराई करते हैं अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने को हो रही है दशा नाकिस में धन माल का निकल जाना पीड़ा का घर मेंबास होना इज्जत का भय होना हुवा हुबाया मंगलाचार का हट जाना और राजद्वार की चिंता होना यह सब बात नाकिस दशा में होती हैं अब तुम सायंकाल को घृत का दीपक शिवजी के मन्दिर में प्रज्वलित किया करो और जलका लोटा भर के शिवजी को और पीपल पर चढ़ाया करो और इतवार को ब्राह्मण जिमाओ अथवा वृत किया करो कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पत्रे में देखो सो नाकिस दशा का फल न्यून हो जायगा जो उपरोक्त कार्य करो उसके करने से जो तुम्हारी मनो कामना है वह पूर्ण होगी और कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक अब तुम्हारे खोटे दिन व्यतीत हो गये। अच्छे आने वाले हैं अब तक तुम पर बहुत नाकिस दशा चल रही थी। नाकिस दशा में ही ऐसे काम होते हैं। जो फिक्र तुम पर है। बहुत नुकसान उठाया और लाभ कम रहा पीड़ा रूपी क्लेश में धन खर्च हुआ और चीज निकल गई। इज्जत का भय हुवा परन्तु तुम्हें अब अपने इष्ट देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर ग्रह का दान निश्चय करके कराना चाहिये। फिर यत्न के कराने से तुम्हें जल्दी और नये लाभ होंगे। जीव की प्राप्ति होगी मित्र से मुला-कात जो है विशेष होगी ग्रह की पीड़ा नष्ट होगी। शत्रु का नाश होगा और ये जो मन की कामना सो पूर्ण होगी और बड़े २ फिक्र जो ऊपर से खर्च के दीख रहे हैं। सो सब आनन्द में कांटा सा निकल जायगा कुशलता प्राप्त होगी, काम सिद्ध होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा इस समय का प्रश्न बहुत श्रेष्ट दीखता है बुरे दिन गये और अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पर दो तीन ग्रह मध्यम आ गये हैं और तुमने उनका दान जप कराया नहीं है इस कारण ऐसे फिक्र चिंता उठाई लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीड़ा की चिंता चित्त में, भयसा होना, काम उम्दा लाभ का अभी नहीं बना, जीव की चिंता है, वंश की वृद्धि और मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार का चिंता है अब छाया दान और चने की दाल पेला वस्त्र हल्दी स्वर्णदान श्रद्धानुसार कराना चाहिये ऊपर के दान पुन्य के कराने से ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ती होगी लाभ का रास्ता खुलेगा भूमि से लाभ और पीड़ा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में सफलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी के अनुसार काम होने में देर है कष्ट रूपी रंज, क्लेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जाता है ऐसी सब बातें मध्यम दशा में ही होती हैं अगर कभी कहीं गबन हो जाय तो भी ताज्जुब की बात नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है इस समय उसका प्राप्त होना कठिन प्रतीत होता है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अभिलाषा है अब तुम नवग्रह का पूजन दान करो उसके कराने से दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ट आयेगी सो सब काम उत्तम दशा में सफल होंगे जीव का लाभ होगा गई हुई चीज फिर प्राप्त होगी कष्ट बाधा नष्ट होगी, उच्च पदवी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चितवन करतेहो चित्तकी वार्ता चित्तमें समा जाती है अब शीघ्र ही खुशी की वार्ता सुनने में आवेगी

हे प्रच्छक जब दशा जीव पर नाकिस आती है और नाकिस ग्रह चौथे आठवे बारहवें में हो जाते हैं तब ऐसे ही काम होते हैं। खर्च विशेष होता है लाभ कम होता है और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला हुआ धन देर से प्राप्त होगा। जिस काम को करना विचारते हो, सो समझ कर करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलंब है। एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पर कैड़े हैं उनका पत्रा देख कर यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख होगा तुम्हें उन ग्रहों का यत्न कराना चाहिये यत्न के कराने से तुम्हें आराम होगा उच्च पदवी प्राप्त होगी, काम में फायदा होगा एक जगह विशेष माल मिलेगा। विलंब से खातर जमा रखो तुम ईश्वर का भजन किया करो भूलो मत।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रमण रहती है। ईश्वर को सत्य नहीं मानते हो जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा उसका भजन किया करो अन्त में आशा पूर्ण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आराम की सूरत होने वाली है एक काम में विशेष लाभ होगा परन्तु अब मंगल के ब्रत किया करो और पक्षियों को बाजरा भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूर ग्रहों का जप दान कराते रहा करो ऐसा उपाय कराते रहने से मन वांछित फल मिलेगा। कार्ज सिद्ध होंगे जो बड़े खर्च के काम समझ रक्खे हैं वो भी कांटा सा होकर आनन्द में निकल जायगा काम देव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून हो जाती है चिंता न करो उसने चाहा तो शीघ्र ही कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक तुम्हारे इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत शीघ्र बनेगी और आराम की सूरत नज़र आती है पिछले साल कुछ महीने मध्यम रहे खर्च विशेष रहता था और आमदनी न्यून होती थी उसने चाहा तो अब भाग्य उदय होगा और काम में सफलता प्राप्त होगी थोड़ा विलम्ब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगाकर किया करो और घृत सांभर श्रद्धा अनुसार दान करो जिसके कराने से तुम्हें फिर नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा चिंताएं मिटेंगी बाधाएं टलेंगी और खुशी प्राप्त होगी एक काम तुमसे न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ती होगी नवीन २ वार्ता की समुद्र की तरंगसी चित्त में उठती हैं और समा-जाती हैं

हे प्रच्छक तुम्हारे कार्य में विलंब है काम अभी ठीक न होगा दशा नाकिस चल रही है कई ग्रह नाकिस हैं पंचांग खोल कर देखा सोचते हो कुछ और होता है कुछ। कई वार्ता की चता बनी हुई है। जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी क्लेश की। परन्तु तुम सत्यवादी हो सत्य बोलने को पसंद करते हो झूंट से क्रोधित होते हो पराये काम मन से प्रीत लगा कर करते हो किसी का बुरा नहीं चाहते हो। तुम्हें विद्या कम है परन्तु बुद्धि अकल बड़े विद्वानों से विशेष है हर एक की बात की झूंट सत्य का परीक्षा समझलेते हो एक काम न्यून बनगया था सो ईश्वर की भक्ति विशेष करो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ ऐसा कराने से तुम्हें मनवांछित फल मिलेगा और लाभ होगा। तुमने अपने ऊपर बड़ा जो फिक्र समझ रक्खा है सब काम आनन्द में हो जायगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न शगुण इस वक्त बहुत श्रेष्ट है। तुम्हें बिना कारण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न हो जाता है। बुद्धि भ्रमण हो जाती है। गया सो गया फिर आयेगा मिलेगा क्या मिलेगा, आराम मिलेगा धन की प्राप्ति होगी, घर में मंगलाचार होगा पीड़ा का नाश होगा जीव की खुशी और प्राप्ती होगी अकस्मात खुश खबरी सुनने को मिलेगी तुम अपने इष्ट देव मित्र देवताओं के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न, कच्चा दूध, मावश्या को पिलाते रहा करो इस प्रकार दान पुन्य कराने से रोजगार बढ़ेगा उच्च पदवी पाने में सफल होगे एक जीव का ध्यान बना रहता है मित्र के ध्यान में चित्त बहुत रहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परन्तु अकल बुद्धि तेज हैं किसी का बुरा नहीं चाहते हो सत्य वार्ता को पसन्द करते हो खर्च है अन्जाम कुशल है राजद्वार से अन्त में विजय है

हे प्रच्छक तुम्हारे खोटे दिन गये अब श्रेष्ट आने वाले हैं। तुमने जो काम सोच रक्खा है उसे देख भाल कर सोच समझ कर करना क्यों कि तुम पर नाकिस दशा चल रही हैं अब आगे को दशा बदलेगी जो ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस चल रहे हैं उनका पूजन जाप विधि पूर्वक कराना चाहिए उसके करने के पश्चात उत्ताम दशा आयेगी लाभ की सूरत होगी तुम्हारे पिछले दिन बहुत नाकिस दशा में गुजरे खर्च विशेष रहा लाभ न्यून रहा मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता था यह सब नाकिस दशा का प्रभाव है ऐसी दशा में कार्य ठीक नहीं होता है उत्ताम दशा आने पर लाभ अधिक होगा मित्रों से प्रीति बढ़ेगी तथा जीव की प्राप्ति होगी गई हुई चीज वापस मिलेगी। तुम रामनाम की चून की गोली बना कर बहते जल में प्रवेश किया करो यह बड़ा श्रेष्ट काम है इससे भी कार्य में सिद्ध होगी

हे प्रच्छक इस समय तुम्हारी रास पर कई ग्रह नाकिस मौजूद हैं ऐसी अवस्था में शत्रु उत्पन्न होते हैं, आमदनी होती २ रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो वहां पर अधूरा भी नहीं होता है ऐसी दशा में लाभ कम होते हैं प्यारों से जुदाई होती है चिंता रुपी कष्ट रहता है जीव की लालसा बनी रहती है जीव चिंता तथा तरह २ के उद्वेग तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं तुमको कई भारी फिक्र लगे हुए हैं तुम पर नाकिस दशा चल रही है यत्न उपाय कराओ उपाय से शीघ्र दशा बदलेगी तत्पश्चात जीव की प्राप्ति होगी कार्य में सफलता प्राप्त होगी यह जो चिंता है दूर होगी तुम सर्दी में कम्बल अथवा गर्म वस्त्र का दान करो इससे लाभ की सूरत होगी ग्रह उपाय जरुर कराओ यत्न उपाय से जीव लाभ होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्नानुसार तुमको दीर्घ चिंता है। प्रश्न दो तरह के से हैं गई चीज मिलना दूसरा लाभ प्राप्ति है तुम्हारे चित्त में दिन रात समुद्र की तरंग सी उठती हैं तुम जो विचारते हो वह होता नहीं तुमको गुप्त चिंता लगी रहती है और इज्जत का विशेष ध्यान रहता है मन के माफिक लाभ नहीं होता है एक जीव में ध्यान विशेप रहता है तुम पर दशा मध्यम चल रही है पञ्चांग में देखकर उपाय कराओ। उपाय के कराने से शीघ्र दशा बदलेगी उसके बाद लाभ के कार्य होंगे जीव प्राप्ति होगी एक मित्र द्वारा लाभ कार्य होगा तुम गऊ सेवा किया करो बन सके तो संध्या समय गौओं को अन्न मिष्टान मिलाय रोटी बनवाय नित्य जिमाया करो ऐसा करने से शीघ्रति शीघ्र तुम्हारी दशा बदलेगी और प्रत्येक कार्य में लाभ होगा तथा घरमें चांदना सा दिखाई देगा अर्थात सर्व प्रकार से आनन्द होगा

हे प्रच्छक जो हो गया सो हो गया अब तुम्हें कार्य चतुराई बुद्धिमानी तथा सोच विचार के करना चाहिए क्यों कि तुम पर नासिक दशा चल रही है तुम्हें चिंता फिक्र बहुत रहता है ग्रहों का उपाय कराओ उपाय के कराने से दशा बदलेगी तत्पश्चात कार्य सिद्ध होगा राजद्वार मे खुशी प्राप्त होगी जीव की प्राप्ति होगी लाभ और मङ्गलाचार होगा तुम पर बहुत दिन से यह दशा चल रही है तुम इन ग्रहों का उपाय पहले से कर देते तो निहाल हो जाते कामदेव की प्रबलता में बुद्धि न्यून हो जाती है कार्य होते २ रुक जाता है कार्य में शत्रु रुपी ग्रह हानि करा रहे हैं जो कार्य सोचा है विलंब से होगा तुम श्री दुर्गा देवी का भजन पूजन किया करो बन सके तो हवन कराया करो ऐसा करने से नये २ लाभ होंगे कष्टवाधा नष्ट होगी तथा सब प्रकार का आनन्द होगा तम्हारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी ।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है तुम पर दशा बहुत दिन से मध्यम थी खर्च विशेष हुवा लाभ कम हुआ अब तुमको दशा श्रेष्ट आने वाली है तुम्हारी कामना पूर्ण होगी तुमने जो काम विचारा है काम ठीक बैठेगा तुम्हारा प्रश्न उत्तम है तुमको भाग्य की वृद्धि होगी घर में मंगलाचार होगा राजद्वार से न्याय की आशा तथा तुम्हें किसी प्यारे और धन की रोजगार की चिंता बनी रहती है जो सोचते हो सिद्ध नहीं होता इस कारण तुम्हारे ऊपर जो ग्रह दशा चल रही है उसका यत्न उपाय कराओ उपाय होने पर शीघ्र दशा अच्छी आवेगी अच्छी दशा के आने पर लाभ की नई नई सूरत बनेंगी तथा वंश की वृद्धि होगी तुम ईश्वर का भजन किया करो मंगल का वृत रक्खा करो और अनाथों की सहायता किया करो इससे सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होंगे।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि चलायमान रहती है कभी कुछ सोचते हो और कभी कुछ बुद्धि स्थिर नहीं रहती है और तुम्हारा किसी कार्य में मन नहीं लगता है तुम्हें दशा न्यून चल रही है ऐसी दशा में चिंता क्लेश फिकर कष्ट रहते हैं लाभ कम होता है खर्च विशेष रहता है अनेक लाभ कार्य सोचते हो लेकिन इच्छा के अनुसार लाभ नहीं होता है अर्थात होता २ रुक जाता है तुमको एक जीव की चता भी लगी हुई है राज द्वार का मामला भी दीखे है कृत्य का भारी फिकर लगा है यह सब ग्रह दशा का प्रभाव है तम्हारा दान पुण्य में भी चित्त नहीं है तुम्हें उधर ध्यान देना चाहिये अगर जो बन सके तुम दान अवश्य किया करो और भक्ति पूर्वक ईश्वर का भजन पूजन भी किया करो तथा नाकिस दशा का उपाय अवश्य कराओ उपाय पूजन दान पुण्य करनेसे तुम्हारी दशा बदलेगी कार्य की सिद्धि होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ट है जो हो गया सो हो गया अब चिंता और फिक्र मिटेगा तुम्हारा कार्य सफल होगा जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से खुशी प्राप्त होगी और भूमि से लाभ होगा मंगलाचार और प्रसन्नता होगी तम्हारा एक जीव में चित्त बहुत रहता है तुम तरह २ की वार्ता का चतवन करते हो तुम्हारा चित्त चलायमान रहता है तुमको बहुत दिन से दशा मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है तुम जो काम सोचते हो उसमें तारभंग हो जाता है गुप्त शत्रु तुमको नुकसान पहुंचाते हैं अर्थात ऊपर से तुमसे मीठी २ बात करते हैं और अन्दर से काट करते हैं तुमने एक काम बहुत दिनों से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तो अवश्य होगा इष्टदेव पित्रों के निमित्त दान पूजन कराओ उपाय न कराने से कार्य सिद्ध देर से होगा पूर्णमासी को सत्य नारायण का व्रत रक्खा करो कथा कराओ इसके कराने से मनोकामना पूर्ण होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न श्रेष्ट है तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा तुमको जीव और लाभ की चिंता बनी रहती है तुमने लाभ का उद्योग किया परन्तु लाभ कम होता है सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा कष्ट व्याधा रंज आदि नष्ट होंगे। घर में खुशी होगी तुम तरह २ का उद्योग सोचते हो परन्तु चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है पीड़ा की चिंता चित्त में भय रहता है काम उत्तम लाभ का अभी नहीं बना और एक जीव में चित्त विशेष रहता है राजद्वार का भी ध्यान बना रहता है दशा मध्यम चल रही है उसका श्रद्धानुसार उपाय करो और बन सके तो शिव मन्दिर में नित्य घृत का दीपक जलाया करो सवेरे ही मन्दिर की सफाई किया करो अथवा सोमवार का व्रत किया करो ईश्वर चाहे तो मनो कामना पूर्ण होगी बाधायें नष्ट कष्ट आदि समाप्त होंगी उच्च पदवी मिलेगी जीव प्राप्ति होगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता होने वाली है खोटे दिन बीत गये श्रेष्ट आने वाले हैं आराम होगा कार्य सफल होगा जिसकी चाहना है वह मिलेगा और यह जो तुमने चित्त में काम बिचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम चल रहे हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता है। नेष्ट दशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रुता होती है सा अपनी रास पर जो दो तीन ग्रह नाकिस हैं उनका दान मंत्र जाप कराने से घर में आनन्द और मंगला—चार होगा और जीव की प्राप्ति होगी। यात्रा से लाभ होगा कार्य सफल होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पर व्रण यानी फोड़े फुन्सी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतवन करते हो।

हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष होना रहा लाभ मध्यम होना था सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा व्याधा और रंज नष्ट होंगे घर में खुशी होगा चित्त की चिंता चित्त में समा जाती है। समुद्र की तरंग सी नई नई उठती हैं सो वृथा जाती हैं। एक जीव में चित्त बहुत अधिक रहता है। अब ईश्वर चाहे तो कहीं से खुशी की बात सुनोगे उच्च पदवी प्राप्त होगी नाकिस ग्रहों का दान और सुबह शाम शिवजी का भजन किया करो और यह जो तुमने प्रश्न किया है उस काम में भी सफलता प्राप्त होगी मिलेगा गई सो गई अब राख रही कोई काम काबू से बाहर है कार्य सिद्ध होगा ईश्वर का भरोसा करो काम में सफलता शीघ्र प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। प्रथम दशा न्यून थी, अब दशा श्रेष्ट आने वाला है। जीव की चिंता बनी रहती है। और लाभ का उद्योग विशेष सोचते हो परन्तु लाभ अधूरा होता है। और यह जो अब फिक्र है और खर्च सो दूर होगा। आराम होगा गुप्त वो भी मिलेगा सफलता प्राप्त होगी कष्ट नष्ट होगा। कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पञ्चाङ्ग में देखो सो अब उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ। और बिनादान के कार्य सिद्ध देर से होगा। इस कारण चावल, मिष्टान, स्वेतवस्त्र, रजनित, अर्थात श्रद्धा प्रमाण चांदी दान का करना वहुत श्रेष्ट मन की कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत बनने वाली है चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन किया करो प्रश्न श्रेष्ट हे अन्जाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ट है

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कार्य आधीन से बाहर अर्थात काम काबू से बाहर है चिंता कष्ट कई जीव शत्र ता गुप्त करे हैं परन्तु उनसे कुछ हो नहीं सकता एक जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हीन वार्तालाप सोचते हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चिन्तवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे हैं जीव की प्राप्ति होगी सफलता प्राप्त होगी और चंगा होगा और यह जी अब चिंता है सब दूर हो जायगी पीत दान करो चने की दाल हल्दी पेला वस्त्र पेले पुष्प स्वर्ण श्रद्धानुसार गुप्त चिंता दूर होगी कार्य में सफलता होगी मनवांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र रहता है गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है यह कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष होगा जीव की लालसा जीव चिंता बनी रहती है तरह तरह के उदवेग चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परन्तु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परन्तु पाप ग्रहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मन्त्र भी जपवाओ (मंत्र) उों एँ ह्रीं श्रीं बटुक भैर्वाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय ममरक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र के जाप से मनो— कामना पूर्ण होगी और यह जो चित्त को दीर्घ चिंता हैं सो काम होगा और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई नई वार्ता का चिन्तवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है॥

हे प्रच्छक तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मर्जी के माफ़िक कार्य होगा चित्त उस बिना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून थी जिसके कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च अधिक हो रहा है जीव का दुख रहता है काम दूसरे के काबू में है बनता बनता रुक जाता है और दो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर कैड़े हैं पंचाङ्ग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मन्त्र स्थिर चित्त करके पंडित जी से कराओ उसके कराने से कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और यह जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आ रहे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगा परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अन्जाम अच्छा दीखता है कार्य में भी लाभ होगा अगर हो सके तो शिवजी का पूजन नित्य किया करो।

इस समय के प्रश्न का फल यह है कि काम ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है गुप्त चिंता रहती है कभी चित्त में कुछ आता है कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशेष होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आराम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली है और श्रेष्ट आने वाली है परन्तु काम में देर है। इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के निमित्त मिष्टान वस्त्र कच्चा दूध पीपल को जल देना श्रेष्ट है कई महीने से भाग्य की हीनता यानी मध्यम है। पूजन करने से धन की प्राप्ति होगी और जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का दूर होना यह जो अब बहुत चिन्ता है काम जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम काबू से बाहर हो गया दशा मध्यम है

हे प्रच्छक तुम्हारी रास पर आजकल कई ग्रह नाकिस हैं पञ्चांग खोलकर देखो जब ऐसे ग्रह रास पर आते हैं तो लाभ कम होता है शत्रु उत्पन्न होते हैं मित्र व प्यारों से जुदाई होती है कष्ट और रंज होते हैं आमदनी होती होती रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो अधूरा होता है एक जीव लालसा की आस लगी रहती है व्यय दीर्घ लाभ मध्यम होता है काम होने को हो तो फिर तार भंग हो जाता है सो अब मध्यम ग्रहों का दान जाप कराओ आप भी यह मंत्र जपो ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैरवाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा दान मंत्र जाप करने से यह जो तुम्हारे मन की कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर होकर पुत्रोंका लाभ होगा राज्यसे सफलता मित्र से प्रीत विशेष इतने उपाय न बनेगा दशा मध्यम रहेगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है अब दशा श्रेष्ट आने वाली है कामना पूर्ण होगी जो काम चित्त में धारण करा है वह सफल होगा चिंता दूर होगी मनो कामना पूर्ण होंगी मित्रों से प्रीत होगी कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो कार्य चित्त में विचारा है काम ठीक बठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम चल रही थी व्यय विशेष हुवा जोव की प्राप्ति होगी ऋण की न्यूनता हो प्रश्न श्रेष्ट है उद्योग व उपाय पहले तुमने बहुतेरे करे पर निर्फल गये काम काबू से बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश खबरी की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होगा यह जो प्रश्न विचारा है इसके वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी का पूजन कराओ चावल चांदी स्वेत वस्त्र स्वेत फूल का दान कराओ। तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं सो उनका उपाय करने से शीघ्र मन की कामना पूर्ण होगी और मन में एक जीव का ध्यान रहता है।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात् यह मामला है और जीवकी चिंता बनी रहती है और आदमी को भी चिंता बहुत है इज्जत का ख्याल है बड़े २ खर्च दीखते हैं और तुम परोपकारी सत्य बातों को पसंद करते हो छल छिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचते हो पर निर्फल हो जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब नवग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ यह काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्ट देव का पूजन जाप कराने से मनोकामना पूर्ण होगी और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव की प्राप्ति भी होगी और लक्ष्मी का चमत्कार भी प्राप्त होगा और आराम होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न करने का यह मामला है स्वर दुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश आदि मिटे व्याधा टले जिसका प्रश्न है वह चीज़ मिलेगी या न मिलेगी मंगलाचार कब तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीव की चिंता रहती है वंश की बृद्धि हो आजकल तुम जो सोचते हो कुछ उसमें होता है कुछ दो तीन ग्रह रास पर नाकिस आरहे हैं सो उन का उपाय दान पुण्य जाप कराने से चित्त का मनोरथ सिद्ध होगा खुशी प्राप्त होगी काम पराये आधीन है अब तुम चींटीनाल जिमाओ श्रेष्ठ है भूखों को भोजन दो कार्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनोरथ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सूरत और यह जो ऊपर से फ़िक्र दीखते हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशा मध्यम है

इस समय जो आपने प्रश्न किया है ऐसे स्वर में यह वार्ता है कि गुप्त चिंता बनी हुई है एक जीव की लालसा बनी रहती है धन से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो प्राप्त होगी या नहीं मंग ाचार की यह सूरत कब तक होगी जिसमे घर में चांदना हो आराम हो कब तक दिन कैड़े हैं गुप्त लाभ भी होगा यह झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चित्त में चिंता क्लेश रहते हैं कब दिन अच्छे आवेंगे ब्राह्मण को दही लडडू मिष्टान भोजन देने से कार्य में सफलता प्राप्त होगी और तुम्हें अपने इष्ट देव का पूजन घर में पित्र पीड़ा का उपाय शीघ्र करना चाहिये उपाय के कराने से अबके काम सिद्ध होगा इज्जत बढेगी सब से जीतोगे शत्रु रूपी ग्रह हानि कर रहे हैं दिन रात नई - २ वार्ता सोचते हो परन्तु सब निष्फल हो जाती हैं लेकिन अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

इस समय के प्रश्न का यह फल है जीव चिंता भष्यिति धन न्यूनं दिने दिने मंगला चार विलम्बस्य पराधीन कृत्ययो राजद्वार कन्यायं स्थिर कार्य दृष्टय: ग्रहपीड़ा च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषित: मध्यम दशा में मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता कब तक पूर्ण होगी मिलेगा या नहीं रोजगार की हानि है कब तक वृद्धि होगी आज कल दिन नाकिस हैं घर में चांदना कब तक हो यह कार्य अब के भी सफल होगा जिससे वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं पत्रा देखो नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप छाया दान कराने से अब यह मनोरथ सिद्ध होगा। तुम्हारा काम काबू से बाहर है मामला ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात तुम्हारे चित्त में और है यह ग्रह का प्रभाव है परन्तु तुम्हारा अन्त में अच्छा है।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव की चिंता का है कार्य पराधीन काबू से बाहर हो गया बहुतेरे यत्न करते हो बहुतेरी बात सोचते हो मंगलाचार खुशी और वंश की वृद्धि राजद्वार विद्या की सिद्धि धन की जीत श्रेष्ठ दशा में होती है अब जो तुम्हें यह चिन्ता बनी है और लालसा जीव की है सो काम में विलंब है परन्तु मिलेगा और सफल होगा अतः जतन उपाय से इच्छा पूर्ण होगी घर में स्वप्न भी दीखते हैं आराम की सूरत होगी जीव प्राप्ति होगी इज्जत का काम हो संदेह मटेगा धन का मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांदी का दान करो इश्वर चाहे तो उपाय करते ही इच्छा पूर्ण होगी और तुम परोपकारी हो सत्यवादी हो असत्य को पसंद नहीं करते हो बल्कि घृणा करते हो

हे प्रच्छक चित्त चिंता भविष्यति गृह क्लेश न संशयः धनमानम हानि पीड़ा देह दीर्घता मंगलाचारकं योगं वंशवृद्धि च प्राप्तये राजद्वारकं न्याय धन हानि विलम्बता इस प्रश्न का फल यह है तरह २ को वार्ता लाभ को सोचते हो काम काबू से बाहर है दशा कई महीने से मध्यम है न्यून दशा में धन हानि विशेष व्यय लाभ मध्यम चिंता और क्लेश नुकसान होते हैं राजद्वार में भी काम मर्जी के माफिक नहीं होते सो काम कब तक होगा जो घर में चांदना और चमत्कारी हो वंश की और इज्जत की वृद्धि हो और वह मिले एक जीव में चित्त विशेष रहता है सो शिवजी का पूजन करना चींटीनाल देना श्रेष्ठ है और अपने हाथ से गुड़ गेहूं लाल वस्त्र लाल पुष्प आदि दान करके किसी ब्राह्मण को दो ईश्वर चाहे तो अब काम शीघ्र ही बन जावेगा और कामना पूर्ण होगी।

हे प्रच्छक गुप्त चिंता शरीरेन धन हानि च दृश्यते ग्रह पीड़ा भविष्यति दृश्यते भाग्य मंदता जीव चिंता च माप्नोति मंगला चार हर्षकं धन नष्ट न संदेहो जीव प्रश्ने च प्राप्तये इस समय दुस्वभाव स्वर है इसमें भाग्य की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार में न्याय किसी प्यारे की चता विद्या का लाभ रोजगार कृत्य पीड़ा का यत्न दुस्वभाव स्वर में इस प्रकार के प्रश्न होते हैं सो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर आजकल नाकिस चल रहे हैं पत्रे में देखो नाकिस हैं या नहीं जरूर हैं इन नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे भाग्य की वृद्धि का ताला खुले और उच्च पदवी प्राप्त हो तथा जीव की प्राप्ति होकर मंगलाचार के कार्यों में सफलता प्राप्त हो और गुप्त गई हुई चीज भी प्राप्त हो अंजाम कुशल है जिसे चाहोगे सो प्राप्त होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव रूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वर दुस्वभाव है प्रश्न दो तरह कैसे हैं एक शंका अलग हो जाना और दूसरा रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा रहता है तथा जीव की लालसा बनी रहती है जतन भी करते थे परन्तु वृथा चले जाते थे चिंता और इज्जत का ख्याल है और यह ख्याल है अब के भी काम होगा अथवा नहीं राजद्वार की उच्च पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम हैं भाग्य उदय होने को होता है लेकिन होते २ रुक जाता है अब तुम्हें पूजन श्री दुर्गादेवीजी का कराना चाहिए इसके कराने से शांति होगी। कई ग्रह रास पर कैड़े हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम में सफलता प्राप्त होगी कष्ट और बाधा नष्ट होकर लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वह मिलेगी

ह प्रच्छक दीर्घचिंता च प्राप्नोति जीव प्राप्ति न दृश्यते भयभीतं हृदा पराधीनोपि कत्यया राजद्वारकंकार्यं धनंव्यय भविष्यति अन्तकार्यं महा सिद्धि भृगुणापरिभाषतः। तुम पर बहुत दशा न्यून थी। अनेक प्रकार के फिक्र, जीव चिंता और धन का जाना तथा गुप्त क्लेश रहा। तुम्हारा चित्त एक जीव में तत्पर लगा रहता है। नई नई वार्ता लाभ के लिये सोचते हो परन्तु वृथा चली जाती है अब रोजगार की सूरत होगी यह जो जीव की लालसा बनी है सो पूर्ण हो परन्तु विलंब है देर से विजय प्राप्त होगी काम में लाभ होगा छाया दान गुड़ गेहूं लाल वस्त्र स्वर्ण दान के कराने से मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ का कार्य भी सिद्ध होगा काम देव की उनमत्तता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्रभाव है अन्त में कुशलता है। और भूमि का लाभ भी हागा।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है दिन रात विचित्र तरह २ की वार्ता और लोभ सोचते रहते हो बनकर काम की आनन्द की सूरत मध्यम सी हो गई है ऐसी अवस्था में गुप्त चिंता और शत्रु का चित्त में भयसा तथा धन का च ा जाना और मित्र का ख्याल बना रहता है रोजगार का मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशा में बहुत बातों का ख्याल होता है तुम पक्षियों को अन्न बाजरा भोजन दो और श्री बटुक भैरव का पूजन कराओ यह मंत्र जपो उों ऐं ह्रीं क्लीं श्री विष्णुभगवान मम अपराध क्षमाय कुरु कुरु सर्व विघ्न विनाशाय ममकामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा। मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि होती है रोजगार श्रेष्ट होता है जीव की प्राप्ति होती है राजद्वार में विजय होती है गई हुई लक्ष्मी फिर वापिस आती है सर्व कामना सिद्ध होकर सुख शांति प्राप्त होने लगते हैं

हे प्रच्छक तुम्हारा काम बन जायगा स्वर दाहिना चलता है इस समय के प्रश्न का यह फल है कि चिंता और फिक्र मिटेगा गई सो गः अब राख रही जिसने उत्पन्न किया है वही विजय करेगा और जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से लाभ होगा खुशी होगी घर में मंगलाचार होगा एक मित्र में विशेष मन रहता है वह तुम्हारे आधीन रहेगा भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है कामदेव की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाता है अब जो तुम्हारी रास पर ग्रह मध्यम चल रहे हैं उनका दान निश्चय करके कर अ उसके बाद में सर्वसिद्धि होगी। काम होता २ रुक जाता है शत्रु हानि करते है काम और के आधीन है कई आदमियों से मिलके काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली है यह जो और काम है सो उस कार्य में भी विजय प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है ऐसी अवस्था में पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम दशा में मुशकिल होते हैं अर्थात् होता २ लाभ रुक जाता है। धन का नुकसान और धन हरण होता है राजद्वार से सफल होना मुशकिल हो जाता है उच्च पदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचते हो तार भंग हो जाता है और गुप्त शत्रु भांजी मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब इष्टदेव और घरके पित्रों के निमित्त कुछ जप दान आदि कराओ जिससे मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति होगी रोजगार में अधिक लाभ होगा और राजद्वार में सफलता होगी गई चीज मिले मङ्गलचार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य सफल न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न उत्ताम श्रेणी का है जिससे अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा। श्रेष्ट दशा आने वाली है। उत्तम दशा गई। चीज का मिलना, रोजगार में लाभ, अन्न से लाभ और जीव की प्राप्ति तथा राजद्वार में विजय घर में मंगलाचार कष्ट व्याधा नष्ट, यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उनका उपाय जरा और श्रद्धा से करा दो और शाम को और चींटीनाल जब तक बने जिमाया करो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब तुम उपरोक्त कार्य शीघ्र करो ईश्वर चाहे तो काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ होगा एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है उसमें भी सफलता प्राप्त होगी सो आनन्द में बीतेगी कामदेव की उनमत्ताता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है।

हे प्रच्छक अब क्या फिक्र करते हो तुम्हें खुश खबरी प्राप्त होने वाली है गई सो गई अब राख रही अब बहुत देगा वह मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्तु एक फिक्र भारी दीखता है ऊपर से खर्च आवे है और पास धन विशेष नहीं दीखता परन्तु चिंता मत करना क्यों कि तुम्हारा काम बड़ी इज्जत के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त बहुत रहता है वो भी चित्त से प्यार करे है अगर तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहते हो तो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जि० ओ और मट्टी चावल दही दान करो जिसके करने से तुम्हारा काम शीघ्र सिद्ध होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांदना होगा और एक काम तुम से गुप्त से गुप्त नाकिस बना थ सो भी नष्ट होगा सो ईश्वर का ध्यान रक्खा करो कुशलता रहेगी

हे प्रच्छक तुम पर बहुत दिनों से दशा नाकिस थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ की सूरत में हानि पैदा होगई गुप्त शत्रु बुराई करते हैं अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने को हो रही है दशा नाकिस में धन माल का निकल जाना पीड़ा का घर मेंबास होना इज्जत का भय होना हुवा हुवाया मंगलाचार का हट जाना और राजद्वार की चिंता होना यह सब बात नाकिस दशा में होती हैं अब तुम सायंकाल को घृत का दीपक शिवजी के मन्दिर में प्रज्वलित किया करो और जलका लोटा भर के शिवजी को और पीपल पर चढ़ाया करो और इतवार को ब्राह्मण जिमाओ अथवा व्रत किया करो कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पत्रे में देखो सो नाकिस दशा का फल न्यून हो जायगा जो उपरोक्त कार्य करो उसके करने से जो तुम्हारी मनो कामना है वह पूर्ण होगी और कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक अब तुम्हारे खोटे दिन व्यतीत हो गये। अच्छे आने वाले हैं अब तक तुम पर बहुत नाकिस दशा चल रही थी। नाकिस दशा में ही ऐसे काम होते हैं। जो फिक्र तुम पर है। बहुत नुकसान उठाया और लाभ कम रहा पीड़ा रूपी क्लेश में धन खर्च हुआ और चीज निकल गई। इज्जत का भय हुवा परन्तु तुम्हें अब अपने इष्ट देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर ग्रह का दान निश्चय करके कराना चाहिये। फिर यत्न के कराने से तुम्हें जल्दी और नये लाभ होंगे। जीव की प्राप्ति होगी मित्र से मुलाकात जो है विशेष होगी ग्रह की पीड़ा नष्ट होगी। शत्रु का नाश होगा और ये जो मन की कामना सो पूर्ण होगी और बड़े २ फिक्र जो ऊपर से खर्च के दीख रहे हैं। सो सब आनन्द में कांटा सा निकल जायगा कुशलता प्राप्त होगी, काम सिद्ध होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा इस समय का प्रश्न बहुत श्रेष्ट दीखता है बुरे दिन गये और अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पर दो तीन ग्रह मध्यम आ गये हैं और तुमने उनका दान जप कराया नहीं है इस कारण ऐसे फिक्र चिंता उठाई लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीड़ा की चिंता चित्त में, भयसा होना, काम उम्दा लाभ का अभी नहीं बना, जीव की चिंता है, वंश की वृद्धि और मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार का चिंता है अब छाया दान और चने की दाल पेला वस्त्र हल्दी स्वर्णदान श्रद्धानुसार कराना चाहिये ऊपर के दान पुन्य के कराने से ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ती होगी लाभ का रास्ता खुलेगा भूमि से लाभ और पीड़ा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में सफलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी के अनुसार काम होने में देर है कष्ट रूपी रंज, क्लेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जाता है ऐसी सब बातें मध्यम दशा में ही होती हैं अगर कभी कहीं गबन हो जाय तो भी ताज्जुब की बात नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है इस समय उसका प्राप्त होना कठिन प्रतीत होता है मंगला चार में देर है एक जीव की भी अभिलाषा है अब तुम नवग्रह का पूजन दान करो उसके कराने से दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ट आयेगी सो सब काम उत्ताम दशा में सफल होंगे जीव का लाभ होगा गई हुई चीज फिर प्राप्त होगी कष्ट बाधा नष्ट होगी, उच्च पदवी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चितवन करतेहो चित्तकी वार्ता चित्तमें समा जाती है अब शीघ्र ही खुशी की वार्ता सुनने में आवेगी

हे प्रच्छक जब दशा जीव पर नाकिस आती है और नाकिस ग्रह चौथे आठवे बारहवें में हो जाते हैं तब ऐसे ही काम होते हैं। खर्च विशेष होता है लाभ कम होता है और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला हुआ धन देर से प्राप्त होगा। जिस काम को करना विचारते हो, सो समझ कर करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलंब है। एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पर कैड़े हैं उनका पत्रा देख कर यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख होगा तुम्हें उन ग्रहों का यत्न कराना चाहिये यत्न के कराने से तुम्हें आराम होगा उच्च पदवी प्राप्त होगी, काम में फायदा होगा एक जगह विशेष माल मिलेगा। विलंब से खातर जमा रखो तुम ईश्वर का भजन किया करो भूलो मत।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रमण रहती है। ईश्वर को सत्य नहीं मानते हो जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा उसका भजन किया करो अन्त में आशा पूर्ण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आराम की सुरत होने वाली है एक काम में विशेष लाभ होगा परन्तु अब मंगल के व्रत किया करो और पक्षियों को बाजरा भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूर ग्रहों का जप दान कराते रहा करो ऐसा उपाय कराते रहने से मन वांछित फल मिलेगा। कार्ज सिद्ध होंगे जो बड़े खर्च के काम समझ रक्खे हैं वो भी कांटा सा होकर आनन्द में निकल जायगा काम देव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून हो जाती है चिंता न करो उसने चाहा तो शीघ्र ही कुशलता प्राप्त होंगी।

हे प्रच्छक तुम्हारे इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत शीघ्र बनेगी और आराम की सूरत नज़र आती है पिछले साल कुछ महीने मध्यम रहे खर्च विशेष रहता था और आमदनी न्यून होती थी उसने चाहा तो अब भाग्य उदय होगा और काम में सफलता प्राप्त होगी थोड़ा विलम्ब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगाकर किया करो और घृत सांभर श्रद्धा अनुसार दान करो जिसके कराने से तुम्हें फिर नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा चिंताएं मिटेंगी बाधाएं टलेंगी और खुशी प्राप्त होगी एक काम तुमसे न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ती होगी नवीन २ वार्ता की समुद्र की तरंगसी चित्त में उठती हैं और समा जाती हैं

हे प्रच्छक तुम्हारे कार्य में विलंब है काम अभी ठीक न होगा दशा नाकिस चल रही है कई ग्रह नाकिस हैं पंचांग खोल कर देखा सोचते हो कुछ और होता है कुछ। कई वार्ता की चता बनी हुई है। जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी क्लेश की परन्तु तुम सत्यवादी हो सत्य बोलने का पसंद करते हो झूंट से क्रोधित होते हो पराये काम मन से प्रीत लगा कर करते हो किसी का बुरा नहीं चाहते हो। तुम्हें विद्या कम है परन्तु बुद्धि अकल बड़े विद्वानों से विशेष है हर एक की बात की झूंट सत्य का परीक्षा समझलेते हो एक काम न्यून बनगया था सो ईश्वर की भक्ति विशेष करो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ ऐसा कराने से तुम्हें मनवांछित फल मिलेगा और लाभ होगा। तुमने अपने ऊपर बड़ा जो फिक्र समझ रक्खा है सब काम आनन्द में हो जायगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न शगुण इस वक्त बहुत श्रेष्ट है। तुम्हें बिना कारण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न हो जाता है। बुद्धि भ्रमण हो जाती है। गया सो गया फिर आयेगा मिलेगा क्या मिलेगा, आराम मिलेगा धन की प्राप्ति होगी, घर में मंगला चार होगा पीड़ा का नाश होगा जीव की खुशी और प्राप्ती होगी अकस्मात खुश खबरी सुनने को मिलेगी तुम अपने देव मित्र देवताओं के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न, कच्चा दूध, मावश्या को पिलाते रहा करो इस प्रकार दान पुन्य कराने से रोजगार बढ़ेगा उच्च पदवी पाने में सफल होगे एक जीव का ध्यान बना रहता है मित्र के ध्यान में चित्त बहुत रहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परन्तु अकल बुद्धि तेज हैं किसी का बुरा नहीं चाहते हो सत्य वार्ता को पसन्द करते हो खर्च है अन्जाम कुशल है राजद्वार से अन्त में विजय है

हे प्रच्छक तुम्हारे खोटे दिन गये अब श्रेष्ट आने वाले हैं। तुमने जो काम सोच रक्खा है उसे देख भाल कर सोच समझ कर करना क्यों कि तुम पर नाकिस दशा चल रही हैं अब आगे को दशा बदलेगी जो ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस चल रहे हैं उनका पूजन जाप विधि पूर्वक कराना चाहिए उसके करने के पश्चात उत्तम दशा आयेगी लाभ की सूरत होगी तुम्हारे पिछले दिन बहुत नाकिस दशा में गुजरे खर्च विशेष रहा लाभ न्यून रहा मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता था यह सब नाकिस दशा का प्रभाव है ऐसी दशा में कार्य ठीक नहीं होता है उत्तम दशा आने पर लाभ अधिक होगा मित्रों से प्रीति बढ़ेगी तथा जीव की प्राप्ति होगी गई हुई चीज वापस मिलेगी। तुम रामनाम की चून की गोली बना कर बहते जल में प्रवेश किया करो यह बड़ा श्रेष्ट काम है इससे भी कार्य में सिद्ध होगी

हे प्रच्छक इस समय तुम्हारी रास पर कई ग्रह नाकिस मौजूद हैं ऐसी अवस्था में शत्रु उत्पन्न होते हैं, आमदनी होती २ रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो वहां पर अधूरा भी नहीं होता है ऐसी दशा में लाभ कम होते हैं प्यारों से जुदाई होती है चिंता रुपी कष्ट रहता है जीव की लालसा बनी रहती है जीव चिंता तथा तरह २ के उद्वेग तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं तुमको कई भारी फिक्र लगे हुए हैं तुम पर नाकिस दशा चल रही है यत्न उपाय कराओ उपाय से शीघ्र दशा बदलेगी तत्पश्चात जीव की प्राप्ति होगी कार्य में सफलता प्राप्त होगी यह जो चिंता है दूर होगी तुम सर्दी में कम्बल अथवा गर्म वस्त्र का दान करो इससे लाभ की सूरत होगी ग्रह उपाय जरूर कराओ यत्न उपाय से जीव लाभ होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्नानुसार तुमको दीर्घ चिंता है। प्रश्न दो तरह के से हैं गई चीज मिलना दूसरा लाभ प्राप्ति है तुम्हारे चित्त में दिन रात समुद्र की तरंग सी उठती हैं तुम जो विचारते हो वह होता नहीं तुमको गुप्त चिंता लगी रहती है और इज्जत का विशेष ध्यान रहता है मन के माफिक लाभ नहीं होता है एक जीव में ध्यान विशेप रहता है तुम पर दशा मध्यम चल रही हे पञ्चांग में देखकर उपाय कराओ। उपाय के कराने से शीघ्र दशा बदलेगी उसके बाद लाभ के कार्य होंगे जीव प्राप्ति होगी एक मित्र द्वारा लाभ कार्य होगा तुम गऊ सेवा किया करो बन सके तो संध्या समय गौत्रों को अन्न मिष्टान मिलाय रोटी बनवाय नित्य जिमाया करो ऐसा करने से शीघ्रति शीघ्र तुम्हारी दशा बदलेगी और प्रत्येक कार्य में लाभ होगा तथा घरमें चांदना सा दिखाई देगा अर्थात सर्व प्रकार से आनन्द होगा

हे प्रच्छक जो हो गया सो हो गया अब तुम्हें कार्य चतुराई बुद्धिमानी तथा सोच विचार के करना चाहिए क्यों कि तुम पर नासिक दशा चल रही है तुम्हें चिंता फिक्र बहुत रहता है ग्रहों का उपाय कराओ उपाय के कराने से दशा बदलेगी तत्पश्चात कार्य सिद्ध होगा राजद्वार मे खुशी प्राप्त होगी जीव की प्राप्ति होगी लाभ और मङ्गलाचार होगा तुम पर बहुत दिन से यह दशा चल रही है तुम इन ग्रहों का उपाय पहले से कर देते तो निहाल हो जाते कामदेव की प्रबलता में बुद्धि न्यून हो जाती है कार्य होते २ रुक जाता है कार्य में शत्रु रुपी ग्रह हानि करा रहे हैं जो कार्य सोचा है विलंब से होगा तुम श्री दुर्गा देवी का भजन पूजन किया करो बन सके तो हवन कराया करो ऐसा करने से नये २ लाभ होंगे कष्टवाधा नष्ट होगी तथा सब प्रकार का आनन्द होगा तम्हारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी ।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है तुम पर दशा बहुत दिन से मध्यम थी खर्च विशेष हुवा लाभ कम हुआ अब तुमको दशा श्रेष्ट आने वाली है तुम्हारी कामना पूर्ण होगी तुमने जो काम विचारा है काम ठीक बैठेगा तुम्हारा प्रश्न उत्ताम है तुमको भाग्य की वृद्धि होगी घर में मंगलाचार होगा राजद्वार से न्याय की आशा तथा तुम्हें किसी प्यारे और धन की रोजगार की चिंता बनी रहती है जो सोचते हो सिद्ध नहीं होता इस कारण तुम्हारे ऊपर जो ग्रह दशा चल रही है उसका यत्न उपाय कराओ उपाय होने पर शीघ्र दशा अच्छी आवेगी अच्छी दशा के आने पर लाभ की नई नई सुरत बनेंगी तथा वंश की वृद्धि होगी तुम ईश्वर का भजन किया करो मंगल का वृत रक्खा करो और अनाथों की सहायता किया करो इससे सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होंगे।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि चलायमान रहती है कभी कुछ सोचते हो और कभी कुछ बुद्धि स्थिर नहीं रहती है और तुम्हारा किसी कार्य में मन नहीं लगता है तुम्हें दशा न्यून चल रही है ऐसी दशा में चिंता क्लेश फिकर कष्ट रहते हैं लाभ कम होता है खर्च विशेष रहता है अनेक लाभ कार्य सोचते हो लेकिन इच्छा के अनुसार लाभ नहीं होता है अर्थात होता २ रुक जाता है तुमको एक जीव की चता भी लगी हुई है राज द्वार का मामला भी दीखे है कृत्य का भारी फिकर लगा है यह सब ग्रह दशा का प्रभाव है तम्हारा दान पुण्य में भी चित्त नहीं है तुम्हें उधर ध्यान देना चाहिये अगर जो बन सके तुम दान अवश्य किया करो और भक्ति पूर्वक ईश्वर का भजन पूजन भी किया करो तथा नाकिस दशा का उपाय अवश्य कराओ उपाय पूजन दान पुण्य करनेसे तुम्हारी दशा बदलेगी कार्य की सिद्धि होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ट है जो हो गया सो हो गया अब चिंता और फिक्र मिटेगा तुम्हारा कार्य सफल होगा जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से खुशी प्राप्त होगी और भूमि मे लाभ होगा मंगलाचार और प्रसन्नता होगी तम्हारा एक जीव में चित्त बहुत रहता है तुम तरह २ की वार्ता का चितवन करते हो तुम्हारा चित्त चलायमान रहता है तुमको बहुत दिन से दशा मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है तुम जो काम सोचते हो उसमें तारभंग हो जाता है गुप्त शत्रु तुमको नुकसान पहुंचाते हैं अर्थात ऊपर से तुमसे मीठी २ बात करते हैं और अन्दर से काट करते हैं तुमने एक काम बहुत दिनों से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तो अवश्य होगा इष्टदेव पित्रों के निमित्त दान पूजन कराओ उपाय न कराने से कार्य सिद्ध देर से होगा पूर्णमासी को सत्य नारायण का व्रत रक्खा करो कथा कराओ इसके कराने से मनोकामना पूर्ण होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न श्रेष्ट है तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा तुमको जीव और लाभ की चिंता बनी रहती है तुमने लाभ का उद्योग किया परन्तु लाभ कम होता है सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा कष्ट व्याधा रंज आदि नष्ट होंगे। घर में खुशी होगी तुम तरह २ का उद्योग सोचते हो परन्तु चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है पीड़ा की चिंता चित्त में भय रहता है काम उत्तम लाभ का अभी नहीं बना और एक जीव में चित्त विशेष रहता है राजद्वार का भी ध्यान बना रहता है दशा मध्यम चल रही है उसका श्रद्धानुसार उपाय करो और बन सके तो शिव मन्दिर में नित्य घृत का दीपक जलाया करो सवेरे ही मन्दिर की सफाई किया करो अथवा सोमवार का व्रत किया करो ईश्वर चाहे तो मनो कामना पूर्ण होगी बाधायें नष्ट कष्ट आदि समाप्त होंगी उच्च पदवी मिलेगी जीव प्राप्ति होगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता होने वाली है खोटे दिन बीत गये श्रेष्ट आने वाले हैं आराम होगा कार्य सफल होगा जिसकी चाहना है वह मिलेगा और यह जो तुमने चित्त में काम बिचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम चल रहे हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता है। नेष्ट दशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रुता होती है सा अपनी रास पर जो दो तीन ग्रह नाकिस हैं उनका दान मंत्र जाप कराने से घर में आनन्द और मंगला—चार होगा और जीव की प्राप्ति होगी। यात्रा से लाभ होगा कार्य सफल होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पर व्रण यानी फोड़े फुन्सी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतबन करते हो।

हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष होता रहा लाभ मध्यम होता था सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा ब्याधा और रंज नष्ट होंगे घर में खुशी होगी चित्त की चिंता चित्त में समा जाती है। समुद्र की तरंग सी नई नई उठती हैं सो वृथा जाती हैं। एक जीव में चित्त बहुत अधिक रहता है। अब ईश्वर चाहे तो कहीं से खुशी की बात सुनोगे उच्च पदवी प्राप्त होगी नाकिस ग्रहों का दान और सुबह शाम शिवजी का भजन किया करो और यह जो तुमने प्रश्न किया है उस काम में भी सफलता प्राप्त होगी मिलेगा गई सो गई अब राख रही कोई काम काबू से बाहर है कार्य सिद्ध होगा ईश्वर का भरोसा करो काम में सफलता शीघ्र प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। प्रथम दशा न्यून थी, अब दशा श्रेष्ट आने वाला है। जीव की चिंता बनी रहती है। और लाभ का उद्योग विशेष सोचते हो परन्तु लाभ अधूरा होता है। और यह ज अब फिक्र है और खर्च सो दूर होगा। आराम होगा गुप्त वो भी मिलेगा सफलता प्राप्त होगी कष्ट नष्ट होगा। कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पञ्चाङ्ग में देखो सो अब उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ। और विनादान के कार्य सिद्ध देर से होगा। इस कारण चावल, मिष्टान, स्वेतवस्त्र, रजनित, अर्थात श्रद्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ट मन की कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत बनने वाली है चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन किया करो प्रश्न श्रेष्ट है अन्जाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ट है

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कार्य आधीन से बाहर अर्थात काम काबू से बाहर है चिंता कष्ट कई जीव शत्रु ता गुप्त करे हैं परन्तु उनसे कुछ हो नहीं सकता एक जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हीन वार्तालाप सोचते हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चिन्तवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे हैं जीव की प्राप्ति होगी सफलता प्राप्त होगी और चंगा होगा और यह जी अब चिंता है सब दूर हो जायगी पीत दान करो चने की दाल हल्दी पेला वस्त्र पेले पुष्प स्वर्ण श्रद्धानुसार गुप्त चिंता दूर होगी कार्य में सफलता होगी मनबांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र रहता है गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है यह कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष होगा जीव की लालसा जीव चिंता बनी रहती है तरह तरह के उदवेग चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परन्तु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परन्तु पाप ग्रहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मन्त्र भी जपवाओ (मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बटुक भैर्वाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय ममरक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र के जाप से मनो—कामना पूर्ण होगी और यह जो चित्त को दीर्घ चिंता हैं सो काम होगा और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई नई वार्ता का चिन्तवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है॥

हे प्रच्छक तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मर्जी के माफ़िक कार्य होगा चित्त उस बिना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून थी जिसके कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च अधिक हो रहा है जीव का दुख रहता है काम दूसरे के काबू में है बनता बनता रुक जाता है और दो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर कैड़े हैं पंचाङ्ग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मन्त्र स्थिर चित्त करके पंडित जी से कराओ उसके कराने से कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और यह जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आ रहे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगा परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अन्जाम अच्छा दीखता है कार्य में भी लाभ होगा अगर हो सके तो शिवजी का पूजन नित्य किया करो।

इस समय के प्रश्न का फल यह है कि काम ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है गुप्त चिंता रहती है कभी चित्त में कुछ आता है कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशेष होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आराम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली है और श्रेष्ट आने वाली है परन्तु काम में देर है। इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के निमित्त मिष्टान वस्त्र कच्चा दूध पीपल को जल देना श्रेष्ट है कई महीने से भाग्य की हीनता यानी मध्यम है। पूजन करने से धन की प्राप्ति होगी और जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का दूर होना यह जो अब बहुत चिन्ता है काम जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम काबू से बाहर हो गया दशा मध्यम है

हे प्रच्छक तुम्हारी रास पर आजकल कई ग्रह नाकिस हैं पञ्चांग खोलकर देखो जब ऐसे ग्रह रास पर आते हैं तो लाभ कम होता है शत्रु उत्पन्न होते हैं मित्र व प्यारों से जुदाई होती है कष्ट और रंज होते हैं आमदनी होती होती रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो अधूरा होता है एक जीव लालसा की आस लगी रहती है व्यय दीर्घ लाभ मध्यम होता है काम होने को हो तो फिर नार भंग हो जाता है सो अब मध्यम ग्रहों का दान जाप कराओ आप भी यह मंत्र जपो ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैरवाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा दान मंत्र जाप करने से यह जो तुम्हारे मन की कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर होकर पुत्रोंका लाभ होगा राज्यसे सफलता मित्र से प्रीत विशेष इतने उपाय न बनेगा दशा मध्यम रहेगी

हे प्रच्छक यह जो तुमने प्रश्न किया है अब दशा श्रेष्ट आने वाली है कामना पूर्ण होगी जो काम चित्त में धारण करा है वह सफल होगा चिंता दूर होगी मनो कामना पूर्ण होगी मित्रों से प्रीत होगी कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो कार्य चित्त में विचारा है काम ठीक बैठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम चल रही थी व्यय विशेष हुवा जीव की प्राप्ति होगी ऋण की न्यूनता हो प्रश्न श्रेष्ट है उद्योग व उपाय पहले तुमने बहुतेरे करे पर निर्फल गये काम काबू से बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश खबरी की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होगा यह जो प्रश्न विचारा है इसके वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी का पूजन कराओ चावल चांदी स्वेत वस्त्र स्वेत फूल का दान कराओ। तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं सो उनका उपाय करने से शीघ्र मन की कामना पूर्ण होगी और मन में एक जीव का ध्यान रहता है।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात् यह मामला है और जीवकी चिंता बनी रहती है और आदमी को भी चिंता बहुत है इज्जत का ख्याल है बड़े २ खर्च दीखते हैं और तुम परोपकारी सत्य वा। । को पसंद करते हो छल छिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचते हो पर निर्फल हो जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब नवग्रहां का दान मंत्र जाप कराओ यह काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्ट देव का पूजन जाप कराने से मनोकामना पूर्ण होगी और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव की प्राप्ति भी होगी और लक्ष्मी का चमत्कार भी प्राप्त होगा और आराम होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न करने का यह मामला है स्वर दुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश आदि मिटे व्याधा टले जिसका प्रश्न है वह चीज मिलेगी या न मिलेगी मंगलाचार कब तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीव की चिंता रहती है वंश की वृद्धि हो आजकल तुम जो सोचते हो कुछ उसमें होता है कुछ दो तीन ग्रह रास पर नाकिस आरहे हैं सो उन का उपाय दान पुण्य जाप कराने से चित्त का मनोरथ सिद्ध होगा खुशी प्राप्त होगी काम पराये आधीन है अब तुम चींटीनाल जिमाओ श्रेष्ट है भूखों को भोजन दो कार्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनोरथ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सूरत और यह जो ऊपर से फिक्र दीखते हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशा मध्यम है

इस समय जो आपने प्रश्न किया है ऐसे स्वर में यह वार्त्ता है कि गुप्त चिंता बनी हुई है एक जीव की लालसा बनी रहती है धन से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो प्राप्त होगी या नहीं मंग ाचार की यह सूरत कब तक होगी जिसमे घर में चांदना हो आराम हो कब तक दिन कैड़े हैं गुप्त लाभ भी होगा यह झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चित्त में चिंता क्लेश रहते हैं कब दिन अच्छे आवेंगे ब्राह्मण को दही लडडू मिष्टान भोजन देने से कार्य में सफलता प्राप्त होगी और तुम्हें अपने इष्ट देव का पूजन घर में पित्र पीड़ा का उपाय शीघ्र करना चाहिये उपाय के कराने से अबके काम सिद्ध होगा इज्जत बढेगी सब से जीतोगे शत्रु रूपी ग्रह हानि कर रहे हैं दिन रात नई - २ वार्ता सोचते हो परन्तु सब निर्फल हो जाती हैं लेकिन अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

इस समय के प्रश्न का यह फल है जीव चिंता भष्यिति धन न्युनं दिने दिने मंगला चार विलम्बस्य पराधीन कृत्ययो राजद्वार कन्यायं स्थिर कार्य दृष्टय: ग्रहपीड़ा च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषित: मध्यम दशा में मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता कब तक पूर्ण होगी मिलेगा या नहीं रोजगार की हानि है कब तक वृद्धि होगी आज कल दिन नाकिस हैं घर में चांदना कब तक हो यह कार्य अब के भी सफल होगा जिससे वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पर कई ग्रह मध्यम हैं पत्रा देखो नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप छाया दान कराने से अब यह मनोरथ सिद्ध होगा। तुम्हारा काम काबू से बाहर है मामला ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात तुम्हारे चित्त में और है यह ग्रह का प्रभाव है परन्तु तुम्हारा अन्त में अच्छा है।

है प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव की चिंता का है कार्य पराधीन काबू से बाहर हो गया बहुतेरे यत्न करते हो बहुतेरी बात सोचते हो मंगलाचार खुशी और वंश की वृद्धि राजद्वार विद्या की सिद्धि धन की जीत श्रेष्ट दशा में होती है अब जो तुम्हें यह चिन्ता बनी है और लालसा जीव की है सो काम में विलंब है परन्तु मिलेगा और सफल होगा अतः जतन उपाय से इच्छा पूर्ण होगी घर में स्वप्न भी दीखते हैं आराम की सूरत होगी जीव प्राप्ति होगी इज्जत का काम हो संदेह मटेगा धन का मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांदी का दान करो इश्वर चाहै तो उपाय करते ही इच्छा पूर्ण होगी और तुम परोपकारी हो सत्यवादी हो असत्य को पसंद नहीं करते हो बल्कि घृणा करते हो

हे प्रच्छक चित्त चिंता भविष्यति गृह क्लेश न संशयः धनमानम हानि पीड़ा देह दीर्घता मंगलाचारकं योगं वंशवृद्धि च प्राप्तये राजद्वारकं न्याय धन हानि विलम्बता इस प्रश्न का फल यह है तरह २ की वार्ता लाभ की सोचते हो काम काबू से बाहर है दशा कई महीने से मध्यम है न्यून दशा में धन हानि विशेष व्यय लाभ मध्यम चिंता और क्लेश नुकसान होते हैं राजद्वार में भी काम मर्जी के माफिक नहीं होते सो काम कब तक होगा जो घर में चांदना और चमत्कारी हो वंश की और इज्जत की वृद्धि हो और वह मिले एक जीव में चित्त विशेष रहता है सो शिवजी का पूजन करना चींटीनाल देना श्रेष्ट है और अपने हाथ से गुड़ गेहूं लाल वस्त्र लाल पुष्प आदि दान करके किसी ब्राह्मण को दो ईश्वर चाहे तो अब काम शीघ्र ही बन जावेगा और कामना पूर्ण होगी।

हे प्रच्छक गुप्त चिंता शरीरेन धन हानि च दृश्यते ग्रह पीड़ा भविष्यति दृश्यते भाग्य मंदता जीव चिंता च माप्नोति मंगला चार हर्षकं धन नष्ट न संदेहो जीव प्रश्ने च प्राप्तये इस समय दुस्वभाव स्वर है इसमें भाग्य की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या का लाभ रोजगार कृत्य पीड़ा का यत्न दुस्वभाव स्वर में इस प्रकार के प्रश्न होते हैं सो तीन ग्रह तुम्हारी रास पर आजकल नाकिस चल रहे हैं पत्रे में देखो नाकिस हैं या नहीं जरूर हैं इन नाकिस ग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे भाग्य की वृद्धि का ताला खुले और उच्च पदवी प्राप्त हो तथा जीव की प्राप्ति होकर मंगलाचार के कार्यों में सफलता प्राप्त हो और गुप्त गई हुई चीज भी प्राप्त हो अंजाम कुशल है जिसे चाहोगे सो प्राप्त होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जीव रूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वर दुस्वभाव है प्रश्न दो तरह कैसे हैं एक शंका अलग हो जाना और दूसरा रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा रहता है तथा जीव की लालसा बनी रहती है जतन भी करते थे परन्तु वृथा चले जाते थे चिंता और इज्जत का ख्याल है और यह ख्याल है अब के भी काम होगा अथवा नहीं राजद्वार की उच्च पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम हैं भाग्य उदय होने को होता है लेकिन होते २ रुक जाता है अब तुम्हें पूजन श्री दुर्गादेवीजी का कराना चाहिए इसके कराने से शांति होगी। कई ग्रह रास पर कैड़े हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम में सफलता प्राप्त होगी कष्ट और बाधा नष्ट होकर लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वह मिलेगी

हे प्रच्छक दीर्घच्चिंता च प्राप्नोति जीव प्राप्ति न दृश्यते भयभीत हृदा पराधीनोपि कत्यया राजद्वारकंकार्यं धनव्यय भविष्यति अन्तकार्य महा सिद्धि भृगुणापरिभाषतः। तुम पर बहुत दशा न्यून थी। अनेक प्रकार के फिक्र, जीव चिंता और धन का जाना तथा गुप्त क्लेश रहा। तुम्हारा चित्त एक जीव में तत्पर लगा रहता है। नई नई वार्ता लाभ के लिये सोचते हो परन्तु वृथा चली जाती है अब रोजगार की सूरत होगी यह जो जीव की लालसा बनी है सो पूर्ण हो परन्तु विलंब है देर से विजय प्राप्त होगी काम में लाभ होगा छाया दान गुड़ गेहूं लाल वस्त्र स्वर्ण दान के कराने से मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ का कार्य भी सिद्ध होगा काम देव की उनमत्तता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्रभाव है अन्त में कुशलता है। और भूमि का लाभ भी होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से बाहर है दिन रात विचित्र तरह २ की वार्ता और लाभ सोचते रहते हो बनकर काम की आनन्द की सूरत मध्यम सी हो गई है ऐसी अवस्था में गुप्त चिंता और शत्रु का चित्त में भयसा तथा धन का च ा जाना और मित्र का ख़्याल बना रहता है रोजगार का मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशा में बहुत बातों का ख्याल होता है तुम पक्षियों को अन्न बाजरा भोजन दो और श्री बटुक भैरव का पूजन कराओ यह मंत्र ..पो उों ऐं हीं क्लीं श्री विष्णुभगवान मम अपराध क्षमाय कुरु कुरु सर्व विघ्न विनाशाय ममकामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा। मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि होती है रोजगार श्रेष्ट होता है जीव की प्राप्ति होती है राजद्वार में विजय होती है गई हुई लक्ष्मी फिर वापिस आती है सर्व कामना सिद्ध होकर सुख शांति प्राप्त होने लगते हैं

हे प्रच्छक तुम्हारा काम बन जायगा स्वर दाहिना चलता है इस समय के प्रश्न का यह फल है कि चिंता और फिक्र मिटेगा गई सो गई अब राख रही जिसने उत्पन्न किया है वही विजय करेगा और जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से लाभ होगा खुशी होगी घर में मंगलाचार होगा एक मित्र में विशेष मन रहता है वह तुम्हारे आधीन रहेगा भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम चल रहीं थी अब दशा बदलने वाली है कामदेव की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाता है अब जो तुम्हारी रास पर ग्रह मध्यम चल रहे हैं उनका दान निश्चय करके करश्र उसके बाद में सर्वसिद्धि होगी। काम होता २ रुक जाता है शत्रु हानि करते है काम और के आधीन है कई आदमियों से मिलके काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली है यह जो और काम है सो उस कार्य में भी विजय प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है ऐसी अवस्था में पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम दशा में मुशकिल होते हैं अर्थात् होता २ लाभ रुक जाता है। धन का नुकसान और धन हरण होता है राजद्वार से सफल होना मुशकिल हो जाता है उच्च पदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचते हो तार भंग हो जाता है और गुप्त शत्रु भांजी मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब इष्टदेव और घरके पित्रों के निमित्त कुछ जप दान आदि कराओ जिससे मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति होगी रोजगार में अधिक लाभ होगा और राजद्वार में सफलता होगी गई चीज मिले मङ्गल चार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य सफल न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न उत्तम श्रेणी का है जिससे अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा। श्रेष्ट दशा आने वाली है। उत्तम दशा गई। चीज का मिलना, रोजगार में लाभ, अन्न से लाभ और जीव की प्राप्ति तथा राजद्वार में विजय घर में मंगलाचार कष्ट व्याधा नष्ट, यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उनका उपाय जरा और श्रद्धा से करा दो और शाम को और चींटीनाल जब तक बने जिमाया करो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब तुम उपरोक्त कार्य शीघ्र करो ईश्वर चाहे तो काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ होगा एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है उसमें भी सफलता प्राप्त होगी सो आनन्द में बीतेगी कामदेव की उनमत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है।

हे प्रच्छक अब क्या फिक्र करते हो तुम्हें खुश खबरी प्राप्त होने वाली है गई सो गई अब राख रही अब बहुत देगा वह मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्तु एक फिक्र भारी दीखता है ऊपर से खर्च आवे है और पास धन विशेष नहीं दीखता परन्तु चिंता मत करना क्यों कि तुम्हारा काम बड़ी इज्जत के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चिन्ता बहुत रहता है वो भी चित्त से प्यार करे है अगर तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहते हो तो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ और सट्टी चावल दही दान करो जिसके करने से तुम्हारा काम शीघ्र सिद्ध होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांदना होगा और एक काम तुम से गुप्त से गुप्त नाकिस बना थ सो भी नष्ट होगा सो ईश्वर का ध्यान रक्खा करो कुशलता रहेगी

हे प्रच्छक तुम पर बहुत दिनों से दशा नाकिस थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ की सूरत में हानि पैदा होगई गुप्त शत्रु बुराई करते हैं अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने को हो रही है दशा नाकिस में धन माल का निकल जाना पीड़ा का घर मेंबास होना इज्जत का भय होना हुवा हुआया मंगलाचार का हट जाना और राजद्वार की चिंता होना यह सब बात नाकिस दशा में होती हैं अब तुम सायंकाल को घृत का दीपक शिवजी के मन्दिर में प्रज्वलित किया करो और जलका लोटा भर के शिवजी को और पीपल पर चढ़ाया करो और इतवार को ब्राह्मण जिमाओ अथवा वृत किया करो कई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं पत्रे में देखो सो नाकिस दशा का फल न्यून हो जायगा जो उपरोक्त कार्य करो उसके करने से जो तुम्हारी मनो कामना है वह पूर्ण होगी और कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक अब तुम्हारे खोटे दिन व्यतीत हो गये। अच्छे आने वाले हैं अब तक तुम पर बहुत नाकिस दशा चल रही थी। नाकिस दशा में ही ऐसे काम होते हैं। जो फिक्र तुम पर है। बहुत नुकसान उठाया और लाभ कम रहा पीड़ा रूपी क्लेश में धन खर्च हुआ और चीज निकल गई। इज्जत का भय हुवा परन्तु तुम्हें अब अपने इष्ट देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर ग्रह का दान निश्चय करके कराना चाहिये। फिर यत्न के कराने से तुम्हें जल्दी और नये लाभ होंगे। जीव की प्राप्ति होगी मित्र से मुलाकात जो है विशेष होगी ग्रह की पीड़ा नष्ट होगी। शत्रु का नाश होगा और ये जो मन की कामना है सो पूर्ण होगी और बड़े २ फिक्र जो ऊपर से खर्च के दीख रहे हैं। सो सब आनन्द में कांटा सा निकल जायगा कुशलता प्राप्त होगी, काम सिद्ध होगा।

हे प्रच्छक तुम्हारा इस समय का प्रश्न बहुत श्रेष्ट दीखता है बुरे दिन गये और अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पर दो तीन ग्रह मध्यम आ गये हैं और तुमने उनका दान जप कराया नहीं है इस कारण ऐसे फिक्र चिंता उठाई लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीड़ा की चिंता चित्त में, भयसा होना, काम उम्दा लाभ का अभी नहीं बना, जीव की चिंता है, वंश की वृद्धि और मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार का चिंता है अब छाया दान और चने की दाल पेला वस्त्र हल्दी स्वर्णदान श्रद्धानुसार कराना चाहिये ऊपर के दान पुन्य के कराने से ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ती होगी लाभ का रास्ता खुलेगा भूमि से लाभ और पीड़ा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में सफलता प्राप्त होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी के अनुसार काम होने में देर है कष्ट रूपी रंज, क्लेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जाता है ऐसी सब बातें मध्यम दशा में ही होती हैं अगर कभी कहीं गवन हो जाय तो भी ताज्जुब की बात नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है इस समय उसका प्राप्त होना कठिन प्रतीत होता है मंगला चार में देर है एक जीव की भी अभिलाषा है अब तुम नवग्रह का पूजन दान करो उसके कराने से दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ट आयेगी सो सब काम उत्तम दशा में सफल होंगे जीव का लाभ होगा गई हुई चीज फिर प्राप्त होगी कष्ट बाधा नष्ट होगी, उच्च पदवी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चितवन करतेहो चित्तकी वार्ता चित्तमें समा जाती है अब शीघ्र ही खुशी की वार्ता सुनने में आवेगी

हे प्रच्छक जब दशा जीव पर नाकिस आती है और नाकिस ग्रह चौथे आठवे बारहवें में हो जाते हैं तब ऐसे ही काम होते हैं। खर्च विशेष होता है लाभ कम होता है और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला हुआ धन देर से प्राप्त होगा। जिस काम को करना विचारते हो, सो समझ कर करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलंब है। एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पर कैंड़े हैं उनका पत्रा देख कर यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख होगा तुम्हें उन ग्रहों का यत्न कराना चाहिये यत्न के कराने से तुम्हें आराम होगा उच्च पदवी प्राप्त होगी, काम में फायदा होगा एक जगह विशेष माल मिलेगा। विलंब से खातर जमा रखो तुम ईश्वर का भजन किया करो भूलो मत।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रमण रहती है। ईश्वर को सत्य नहीं मानते हो जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा। उसका भजन किया करो अन्त में आशा पूर्ण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आराम की सुरत होने वाली है एक काम में विशेष लाभ होगा परन्तु अब मंगल के ब्रत किया करो और पक्षियों को बाजरा भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूर ग्रहों का जप दान कराते रहा करो ऐसा उपाय कराते रहने से मन वांछित फल मिलेगा। कार्ज सिद्ध होंगे जो बड़े खर्च के काम समझ रक्खे हैं वो भी कांटा सा होकर आनन्द में निकल जायगा काम देव की उनमत्तता में बुद्धि न्युन हो जाती है चिंता न करो उसने चाहा तो शीघ्र ही कुशलता प्राप्त होगी।

हे प्रच्छक तुम्हारे इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत शीघ्र बनेगी और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल कुछ महीने मध्यम रहे खर्च विशेष रहता था और आमदनी न्यून होती थी उसने चाहा तो अब भाग्य उदय होगा और काम में सफलता प्राप्त होगी थोड़ा विलम्ब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगाकर किया करो और घृत सांभर श्रद्धा अनुसार दान करो जिसके कराने से तुम्हें फिर नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा चिंताएं मिटेंगी बाधाएं टलेंगी और खुशी प्राप्त होगी एक काम तुमसे न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ती होगी नवीन २ वार्ता की समुद्र की तरंगसी चित्त में उठती हैं और समा जाती हैं

हे प्रच्छक तुम्हारे कार्य में विलंब है काम अभी ठीक न होगा दशा नाकिस चल रही है कई ग्रह नाकिस हैं पंचांग खोल कर देखो सोचते हो कुछ और होता है कुछ । कई वार्ता की चिंता बनी हुई है । जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी क्लेश की परन्तु तुम सत्यवादी हो सत्य बोलने को पसंद करते हो झूंट से क्रोधित होते हो पराये काम मन से प्रीत लगा कर करते हो किसी का बुरा नहीं चाहते हो । तुम्हें विद्या कम है परन्तु बुद्धि अकल बड़े विद्वानों से विशेष है हर एक की बात की झूंट सत्य की परीक्षा समझलेते हो एक काम न्यून बनगया था सो ईश्वर की भक्ति विशेष करो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ ऐसा कराने से तुम्हें मनवांछित फल मिलेगा और लाभ होगा । तुमने अपने ऊपर बड़ा जो फिक्र समझ रक्खा है सब काम आनन्द में हो जायगा ।

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न शगुण इस बक्त बहुत श्रेष्ट है। तुम्हें बिना कारण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न हो जाता है। बुद्धि भ्रमण हो जाती है। गया सो गया फिर आयेगा मिलेगा क्या मिलेगा, आराम मिलेगा धन की प्राप्ति होगी, घर में मंगलाचार होगा पीड़ा का नाश होगा जीव की खुशी और प्राप्ती होगी अकस्मात खुश खबरी सुनने को मिलेगी तुम अपने इष्ट देव मित्र देवताओं के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न, कच्चा दूध, मावश्या को पिलाते रहा करो इस प्रकार दान पुन्य कराने से रोज़गार बढ़ेगा उच्च पदवी पाने में सफल होगे एक जीव का ध्यान बना रहता है मित्र के ध्यान में चित्त बहुत रहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परन्तु अकल बुद्धि तेज हैं किसी का बुरा नहीं चाहते हो सत्य वार्ता को पसन्द करते हो खर्च है अन्जाम कुशल है राजद्वार से अन्त में विजय है

हे प्रच्छक तुम्हारे खोटे दिन गये अब श्रेष्ट आने वाले हैं। तुमने जो काम सोच रक्खा है उसे देख भाल कर सोच समझ कर करना क्यों कि तुम पर नाकिस दशा चल रही हैं अब आगे को दशा बदलेगी जो ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस चल रहे हैं उनका पूजन जाप विधि पूर्वक कराना चाहिए उसके करने के पश्चात उत्ताम दशा आयेगी लाभ की सूरत होगी तुम्हारे पिछले दिन बहुत नाकिस दशा में गुजरे खर्च विशेष रहा लाभ न्यून रहा मर्जी के माफिक लाभ नहीं होता था यह सब नाकिस दशा का प्रभाव है ऐसी दशा में कार्य ठीक नहीं होता है उत्ताम दशा आने पर लाभ अधिक होगा मित्रों से प्रीति बढ़ेगी तथा जीव की प्राप्ति होगी गई हुई चीज वापस मिलेगी। तुम रामनाम की चून की गोली बना कर बहते जल में प्रवेश किया करो यह बड़ा श्रेष्ट काम है इससे भी कार्य में सिद्ध होगी

हे प्रच्छक इस समय तुम्हारी रास पर कई ग्रह नाकिस मौजूद हैं ऐसी अवस्था में शत्रु उत्पन्न होते हैं, आमदनी होती २ रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझते हो वहां पर अधूरा भी नहीं होता है ऐसी दशा में लाभ कम होते हैं प्यारों से जुदाई होती है चिंता रूपी कष्ट रहता है जीव की लालसा बनी रहती है जीव चिंता तथा तरह २ के उद्वेग तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं रहता है काम काबू से बाहर है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं तुमको कई भारी फिक्र लगे हुए हैं तुम पर नाकिस दशा चल रही है यत्न उपाय कराओ उपाय से शीघ्र दशा बदलेगी तत्पश्चात जीव की प्राप्ति होगी कार्य में सफलता प्राप्त होगी यह जो चिंता है दूर होगी तुम सर्दी में कम्बल अथवा गर्म वस्त्र का दान करो इससे लाभ की सूरत होगी ग्रह उपाय जरूर कराओ यत्न उपाय से जीव लाभ होगा।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्नानुसार तुमको दीर्घ चिंता है। प्रश्न दो तरह के से हैं गई चीज मिलना दूसरा लाभ प्राप्ति है तुम्हारे चित्त में दिन रात समुद्र की तरंग सी उठती हैं तुम जो विचारते हो वह होता नहीं तुमको गुप्त चिंता लगी रहती है और इज्जत का विशेष ध्यान रहता है मन के माफिक लाभ नहीं होता है एक जीव में ध्यान विशेष रहता है तुम पर दशा मध्यम चल रही है पञ्चांग में देखकर उपाय कराओ। उपाय के कराने से शीघ्र दशा बदलेगी उसके बाद लाभ के कार्य होंगे जीव प्राप्ति होगी एक मित्र द्वारा लाभ कार्य होगा तुम गऊ सेवा किया करो बन सके तो संध्या समय गौओं को अन्न मिष्टान मिलाय रोटी बनवाय नित्य जिमाया करो ऐसा करने से शीघ्रति शीघ्र तुम्हारी दशा बदलेगी और प्रत्येक कार्य में लाभ होगा तथा घरमें चांदना सा दिखाई देगा अर्थात सर्व प्रकार से आनन्द होगा

हे प्रच्छक जो हो गया सो हो गया। अब तुम्हें कार्य चतुराई बुद्धिमानी तथा सोच विचार के करना चाहिए क्योंकि तुम पर नासिक दशा चल रही है तुम्हें चिंता फिक्र बहुत रहता है ग्रहों का उपाय कराओ उपाय के कराने से दशा बदलेगी तत्पश्चात कार्य सिद्ध होगा राजद्वार मे खुशी प्राप्त होगी जीव की प्राप्ति होगी लाभ और मङ्गलाचार होगा तुम पर बहुत दिन से यह दशा चल रही है तुम इन ग्रहों का उपाय पहले से कर देते तो निहाल हो जाते कामदेव की प्रबलता में बुद्धि न्यून हो जाती है कार्य होते २ रुक जाता है कार्य में शत्रु रुपी ग्रह हानि करा रहे हैं जो कार्य सोचा है विलंब से होगा तुम श्री दुर्गा देवी का भजन पूजन किया करो बन सके तो हवन कराया करो ऐसा करने से नये २ लाभ होंगे कष्टवाधा नष्ट होगी तथा सब प्रकार का आनन्द होगा तम्हारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी।

हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है तुम पर दशा बहुत दिन से मध्यम थी खर्च विशेष हुवा लाभ कम हुआ अब तुमको दशा श्रेष्ट आने वाली है तुम्हारी कामना पूर्ण होगी तुमने जो काम विचारा है काम ठीक बैठेगा तुम्हारा प्रश्न उत्तम है तुमको भाग्य की वृद्धि होगी घर में मंगलाचार होगा राजद्वार से न्याय की आशा तथा तुम्हें किसी प्यारे और धन की रोजगार की चिंता बनी रहती है जो सोचते हो सिद्ध नहीं होता इस कारण तुम्हारे ऊपर जो ग्रह दशा चल रही है उसका यत्न उपाय कराओ उपाय होने पर शीघ्र दशा अच्छी आवेगी अच्छी दशा के आने पर लाभ की नई नई सूरत बनेंगी तथा वंश की वृद्धि होगी तुम ईश्वर का भजन किया करो मंगल का व्रत रक्खा करो और अनाथों की सहायता किया करो इससे सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होंगे।

हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि चलायमान रहती है कभी कुछ सोचते हो और कभी कुछ बुद्धि स्थिर नहीं रहती है और तुम्हारा किसी कार्य में मन नहीं लगता है तुम्हें दशा न्यून चल रही है ऐसी दशा में चिंता क्लेश फिकर कष्ट रहते हैं लाभ कम होता है खर्च विशेष रहता है अनेक लाभ कार्य सोचते हो लेकिन इच्छा के अनुसार लाभ नहीं होता है अर्थात होता २ रुक जाता है तुमको एक जीव की चता भी लगी हुई है राज द्वार का मामला भी दीखे है कृत्य का भारी फिकर लगा है यह सब ग्रह दशा का प्रभाव है तम्हारा दान पुण्य में भी चित्त नहीं है तुम्हें उधर ध्यान देना चाहिये अगर जो बन सके तुम दान अवश्य किया करो और भक्ति पूर्वक ईश्वर का भजन पूजन भी किया करो तथा नाकिस दशा का उपाय अवश्य कराओ उपाय पूजन दान पुण्य करनेसे तुम्हारी दशा बदलेगी कार्य की सिद्धि होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ट है जो हो गया सो हो गया अब चिंता और फिक्र मिटेगा तुम्हारा कार्य सफल होगा जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से खुशी प्राप्त होगी और भूमि से लाभ होगा मंगलाचार और प्रसन्नता होगी तम्हारा एक जीव में चित्त बहुत रहता है तुम तरह २ की वार्ता का तवन करते हो तुम्हारा चित्त चलायमान रहता है तुमको बहुत दिन से दशा मध्यम चल रही थी अब दशा बदलने वाली है तुम जो काम सोचते हो उसमें तारभंग हो जाता है गुप्त शत्रु तुमको नुकसान पहुंचाते हैं अर्थात ऊपर से तुमसे मीठी २ बात करते हैं और अन्दर से काट करते हैं तुमने एक काम बहुत दिनों से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तो अवश्य होगा इष्टदेव पित्रों के निमित्त दान पूजन कराओ उपाय न कराने से कार्य सिद्ध देर से होगा पूर्णमासी को सत्य नारायण का व्रत रक्खा करो कथा कराओ इसके कराने से मनोकामना पूर्ण होगी

हे प्रच्छक तुम्हारा यह प्रश्न श्रेष्ठ है तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा तुमको जीव और लाभ की चिंता बनी रहती है तुमने लाभ का उद्योग किया परन्तु लाभ कम होता है सो अब प्राप्ति होगी जीव का लाभ होगा कष्ट व्याधा रंज आदि नष्ट होंगे। घर में खुशी होगी तुम तरह २ का उद्योग सोचते हो परन्तु चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है पीड़ा की चिंता चित्त में भय रहता है काम उत्तम लाभ का अभी नहीं बना और एक जीव में चित्त विशेष रहता है राजद्वार का भी ध्यान बना रहता है दशा मध्यम चल रही है उसका श्रद्धानुसार उपाय करो और बन सके तो शिव मन्दिर में नित्य घृत का दीपक जलाया करो सवेरे ही मन्दिर की सफाई किया करो अथवा सोमवार का व्रत किया करो ईश्वर चाहे तो मनो कामना पूर्ण होगी बाधायें नष्ट कष्ट आदि समाप्त होंगी उच्च पदवी मिलेगी जीव प्राप्ति होगी